Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ
فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا

(बनी ईसराईल : 90)

अनुवाद: वास्तव में, हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें खूब फैर फैर कर वर्णन कर दी हैं।अतः अधिकांश मनुष्यों ने कृतघ्न होकर ही इन्कार कर दिया।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-38

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

05 रबीउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 21 तबूक 1402 हिज्री शम्सी, 21 सितंबर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

अंतिम शरई पुस्तक क़ुरआन-ए-करीम जिसका पढ़ना, सुनना, रखना भी पाकिस्तान में अहमदियों पर बैन (Ban) है, एक बहुत बड़ा अपराध है। वही पुस्तक है जिसके द्वारा जमाअत अहमदिया संसार में इस्लाम का संदेश पहुंचा रही है और संसार की इस्लाह कर रही है

आज मुझे विश्वास हो गया है कि जमाअत के ख़िलाफ़ झूठा प्रोपोगंडा हो रहा है और झूठा प्रोपोगंडा हमेशा इलाही जमाअतों के ख़िलाफ़ होता है (इमाम तमाने)

हमारे मुख़ालिफ़ जो पाकिस्तान में भी हैं केवल मुख़ालेफ़त, मुख़ालेफ़त करने के लिए न करें बल्कि हमारी तालीम को सुनें, पढ़ें, समझें। फिर जो आरोप है वे पेश करें

यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार फ़रमाया है तुम लोग यूंही मुख़ालेफ़त करते हो मेरी बात तो पहले सुनो

पाकिस्तान में मुख़ालेफ़ीन अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह नुक़्सान पहुंचाएं लेकिन इन शा अल्लाह तआला एक दिन ख़ुद ही ये सब मर जाऐंगे

आज जमाअत अहमदिया ही है जो क़ुरआन-ए-करीम की गरिमा और स्थान को बुलंद करने और उसकी सच्ची शिक्षा बताने मे व्यस्त है
मैंने बहुत समय तक बहुत सारे धर्मों का पूर्णतः निरीक्षण किया है परंतु अब मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि
जमात अहमदिया ही समस्त मसायल का हल देती है जिस से मेरे दिल-ओ-दिमाग़ को तसल्ली मिलती है। मुझे यहां पर रूहानियत महसूस होती है (चैक रीपब्लिक का एक नौजवान)

जमात अहमदिया पर बारिश की तरह नाज़िल होने वाली अल्लाह की सहायता और कृपा की ईमान अफ़रोज़ घटनाओं का संतुष्टि जनक वर्णन

कोविड (Covid) महामारी के हवाले से जमाअत के लोगों को एहतियात बरतने की तलक़ीन

श्रीमती अम्तुल हादी साहिबा, श्रीमान साक़िब कामरान साहिब नायब वकील M.T.A तहरीक-ए-जदीद, प्रिय आरिब कामरान और श्रीमान प्रोफ़ैसर डाक्टर मुहम्मद इसहाक़ दाऊदा साहिब आफ़ बेनिन का वर्णन और जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 अगस्त 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की बारिश जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ की जमाअत पर हर दिन होती है इस का वर्णन जलसे की रिपोर्ट में होता है।

वहां मैं ने बताया था कि थोड़े समय में सब कुछ वर्णन करना संभव नहीं। किस तरह अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाता है, किस तरह अल्लाह तआला लोगों के दिलों को जमाअत के बारे में खौलता है, किस तरह ईमानों को अल्लाह तआला मज़बूत फ़रमाता है, किस तरह दुश्मनों को नाकाम करता है। बेशुमार वाक़ियात लोग लिखते

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

रहते हैं उनमें से चंद मैं आज भी वर्णन करूँगा क्योंकि ये वाक़ियात बहुत से अहमदियों के दिलों में ईमान की मज़बूती का भी कारण बनते हैं।

अल्लाह तआला किस तरह तब्लीग़ के विभिन्न माध्यमों से सईद रूहों को जमाअत में ला रहा है और नई जमाअतें क़ायम हो रही हैं।

इस बारे में कोंगो किंशासा में जहां हमारा एफ़ ऐम रेडियो है वहां के लोकल मिशनरी हमीद साहिब लिखते हैं कि अवीरा (Uvira) शहर में हमारे रेडियो प्रोग्राम को सुन कर लोकल इमाम मस्जिद ईसा साहिब ने संपर्क किया और फिर वे मिशन हाऊस आए। जमाअत का पैग़ाम समझा और बैअत कर ली। न सिर्फ बैअत की बल्कि अपने गांव अंदेज़ी (Kiliba Ondezi) जा कर तब्लीग़ भी शुरू कर दी। उनकी तब्लीग़ के नतीजे में चौबीस लोग अहमदियत में दाख़िल हुए। जब हमारे मर्कज़ी मुबल्लिग सिलसिला ने वहां दौरा किया तो मज़ीद आठ लोगों ने बैअत की। इस तरह वहां जमाअत क़ायम हो गई। अब एक तरफ़ तो जो नेक फ़ितरत इमाम हैं उनको यह पैग़ाम सुनकर उसको समझने की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और दूसरी तरफ़ पाकिस्तानी उल्मा हैं जो सिवाए मुख़ालेफ़त के और कुछ नहीं जानते। कोंगो किंशासा के सूबे माइनदो नब्बे (Mai-Ndombe) के एक गांव में उमर मुनव्वर साहिब मुअल्लिम हैं। उनको तब्लीग़ के लिए वहां भेजा गया। वहाबी मुस्लमानों की एक मस्जिद में भी वे गए। लोगों में पम्फ़लेट तक़सीम किए। कुछ शरीर नौजवानों ने मस्जिद से निकल कर शोर मचाना शुरू कर दिया और पत्थर मारने शुरू कर दिए। अब जो कहते हैं कि अफ़्रीक़ा में तो लोग अनपढ़ हैं इसलिए बातें सुन लेते हैं। वहां भी मुख़ालेफ़त है। मुअल्लिम साहिब पत्थरों से बचाओ करते हुए बाक़ी लोगों को तब्लीग़ करते रहे और जो लोग थे वे उनके धैर्य और धीरज के रवैय्ये से बहुत प्रभावित हुए और उनमें से कुछ लोग जो इस वजह से निकल गए थे फिर दुबारा मस्जिद में आ गए और उनकी बातें सुनने लगे। जमाअत के मुताल्लिक़ प्रश्न हुए, आरोप पेश किए, बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर दिए। एक उपद्रवी नौजवान ने जो बढ़-बढ़ के बातें कर रहा था, कहा कि तुम लोग लंदन जा कर हज करते हो जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समस्त हज मक्के में किए थे। मुअल्लिम साहिब ने उस से प्रश्न किया कि तुम ये बताओ कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कितने हज किए थे? इस पर इस नौजवान ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जब से पैदा हुए उन्होंने समस्त उम्र हज किए। इस पर मुअल्लिम ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो सिर्फ एक ही हज किया है। मस्जिद में बैठे इमाम और दीगर बड़ी उम्र के लोगों ने इस नौजवान को बुरा-भला कहा कि तुम लोग सब फ़साद कर रहे हो। बहरहाल वे लोग जो फ़साद करने वाले थे शर्मिंदा हो कर वहां से चले गए। बाद में इमाम साहिब जमाअत के वफ़द को अपने घर ले गए जहां इनके इलावा दो और अइम्मा भी थे और कुछ और लोग भी थे इस तरह चालीस, बतालिस लोगों ने वहां जमाअत अहमदिया की इस तब्लीग़ से प्रभावित हो कर बैअत कर ली और यहां भी एक नई जमाअत क़ायम हो गई।

गिनी से इमाम तमाने कहते हैं कि आज तक हम जमाअत के बारे में यही सुनते आए हैं कि आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन और हदीस को नहीं मानते परंतु आज हमने जलसे का प्रोग्राम देखा था। कहते हैं आज इस जलसे की बरकत से हमने आपके ख़लीफ़ा को देखा और सुना है। उन्होंने तो अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन और हदीस के नसाएह फ़रमाए कहते हैं कि आज मुझे यक़ीन हो गया है कि जमाअत के ख़िलाफ़ झूठा प्रोपेगंडा हो रहा है और झूठा प्रोपेगंडा हमेशा इलाही जमाअतों के ख़िलाफ़ होता है।

इमाम साहिब इसी मस्जिद के इमाम थे कहते हैं मैं आज से जमाअत अहमदिया में दाख़िल होता हूँ और मैं अपने समस्त लोगों को जमाअत की तब्लीग़ करूँगा। अल्लाह के फ़ज़ल से यह तब्लीग़ कर भी रहे हैं और उनकी तब्लीग़ से नई जमाअतें भी क़ायम हो रही हैं।

अतः हमारे मुख़ालिफ़ जो पाकिस्तान में भी हैं सिर्फ मुख़ालेफ़त , मुख़ालेफ़त करने के लिए न करें बल्कि हमारी तालीम को सुनें, पढ़ें, समझें। फिर जो आरोप है वे पेश करें। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार फ़रमाया है तुम लोग यूंही मुख़ालेफ़त करते हो मेरी बात तो पहले सुनो।

(उद्धृत सिराज-ए-मुनीर, रुहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 4)

अमीर साहिब लाइबेरिया ने लिखा कि किस तरह अल्लाह तआला मुख़ालेफ़त के बावजूद हमारी सहायता फ़रमाता है। दो वर्ष पहले निंबा (Nimba) काओनटी के एक टाउन गेनागले (Ganaglay) के कुछ लोग अहमदियत में दाख़िल हुए। पहले उनका ताल्लुक़ ईसाइयत से था या लामज़हब थे। बैअत के बाद इन अहबाब की तर्बीयत और नमाज़ों का इंतेज़ाम किसी घर के बरामदे में किया गया। लोकल मुबल्लिग मुर्तज़ा साहिब ने एक दिन नमाज़ के बाद अहबाब को दुआ की तहरीक की कि अल्लाह तआला हमें मस्जिद बनाने के लिए कोई उचित ज़मीन अता फ़रमाए। यह इलाक़ा ईसाइयत और नास्तिक लोगों का गढ़ है और ये लोग मुस्लमानों को अच्छा नहीं समझते इसलिए मस्जिद के लिए ज़मीन का हुसूल बहुत मुश्किल था। अभी बात चीत जारी थी कि एक शख़्स मिस्टर डाहन (Dahn) जो लामज़हब थे और ख़ुदा की हस्ती पर भी यक़ीन नहीं रखते वहां बैठे हुए थे उन्होंने खड़े हो के कहा कि जब से मिशनरी ने हमारे गांव में आना शुरू किया है मैं ने उनका बहुत अच्छा अख़लाक़ देखा है। सब लोगों से मिलते हैं, एक ही बर्तन में खाना खा लेते हैं यहाँ तक कि मैं जो ख़ुदा को नहीं मानता और पक्का शराबी हूँ मेरे पास भी आकर बैठ जाते हैं और हाल अहवाल पूछते हैं। मुझे इस तरह के अख़लाक़ पहले देखने को मिले।

मेरे पास एक प्लाट है जिस पर मैंने अपना घर बनाने का इरादा किया था लेकिन आज मैं इस प्लाट को मस्जिद के लिए देता हूँ।

इसलिए कुछ दिन के बाद बाक़ायदा उन्होंने बैअत भी कर ली। शराब को भी पूर्णतः छोड़ दिया। ये इन्क़लाब पैदा हुआ और इख़लास में तरक़्क़ी करते गए। इख़लास में ऐसी तरक़्क़ी की कि लोगों ने देखा कि ये बिल्कुल ही तबदील शूदा इन्सान बन गए हैं। यहां मस्जिद की तामीर का काम भी शुरू हो गया। लोगों ने चीफ़ के पास एतराज़ किया कि वहां मस्जिद नहीं बनने देनी लेकिन मिस्टर डाहन (Dahn) ने बड़े साहस से कहा कि मैं ने मस्जिद को जगह दी है और यहां मस्जिद बनेगी। इसलिए यह मस्जिद पूर्ण भी हो गई और इस इलाक़े में यह पहली मस्जिद है। इस का नाम मस्जिद नूर है। इस तरह ग़ैर मुस्लिम और अल्लाह तआला को न मानने वाले नास्तिक जो लोग हैं वे भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से न सिर्फ अल्लाह तआला की हस्ती पर यक़ीन रख रहे हैं बल्कि इस्लाम को सच्चा मज़हब समझ कर तस्लीम कर रहे हैं।

बरोंडी में एक क़स्बा है नियानज़ीलक (Nyanza Lac) यहां जमाअत की काफ़ी ज़्यादा मुख़ालेफ़त है क्योंकि इस इलाक़े में मुस्लमान भी हैं। सुन्नी मस्जिद के इमाम ने हर तरह से कोशिश की कि जमाअत की मस्जिद को बंद करवाया जाए। इसके लिए वे सरकारी ओहदेदारों से भी मिला लेकिन उसकी एक न चली। हमारे मुअल्लिम इस मस्जिद के इमाम ने सवाल-ओ-जवाब के लिए बुलाया। सवाल-ओ-जवाब में वफ़ात-ए-मसीह पर बेहस शुरू हुई। जब मुअल्लिम साहिब ने क़ुरआन-ए-करीम के दलायल से वफ़ात मसीह साबित की तो उन तथाकथित उल्मा से उत्तर तो न बन सका जबकि मुअल्लिम से लड़ाई शुरू कर दी और जमाअत पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया। इस पर एक ईसाई ने खड़े हो कर जमाअत के मत का समर्थन किया और इस मौलवी को वाज़िह किया कि जमाअत अहमदिया मुस्लमान है। आपका इस्लाम समझ से बाहर है। उनका तो समझ आता है कि ये क्या कहते हैं। दूसरी तरफ़ इस मस्जिद के मौलवियों की मस्जिद में ही आपस में लड़ाई हो गई और इस वजह से हुकूमत को दख़ल अंदाज़ी करनी पड़ी और उनकी मस्जिद को तीन माह के लिए हुकूमत ने बंद कर दिया।

जो हमारी मस्जिद को बंद करना चाहते थे उनका अपना यह हाल हुआ कि मस्जिद बंद हो गई अब यह तरीक़ बाक़ायदा साज़िश के तहत तथाकथित उल्मा हर स्थान पर दखल कर रहे हैं कि अहमदियों की मस्जिदें बंद करवाओ। पाकिस्तान या पाकिस्तान की तरह अगर मस्जिदें बंद नहीं होतीं तो मीनार और मेहराबें गिराओ। अब पाकिस्तान का क़ानून भी जो है इस में कहीं नहीं लिखा कि अहमदियों को मीनार बनाने की इजाज़त नहीं है लेकिन हुकूमत इन मौलवियों के सामने, तथाकथित उल्मा के सामने घुटने टेकने पर मजबूर है बहर हाल ये अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह नुक़्सान पहुंचाएं लेकिन इन शा अल्लाह तआला एक दिन ख़ुद ही ये सब मर जाऐंगे।

पाकिस्तान में हमें क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत पर पाबंदी है, अनुवाद का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। नाज़रा प्रकाशित होना भी नाक़ाबिल-ए-माफ़ी अपराध है बल्कि कुछ लोगों पर इसलिए सख़्ती भी की गई। ऐसे भी केस दर्ज हुए हैं कि तुम क़ुरआन-ए-करीम सुन क्यों रहे थे, रिकार्डिंग पर क्यों लगाया हुआ था। अब ये तथाकथित मुस्लमानों का इस्लाम है। मुल्लां ने दीन को बिगाड़ के रख दिया है। इस के मुक़ाबिल पर अल्लाह तआला हमारे लिए किस तरह रास्ते खोलता है। हम संसार के विभिन्न देशों में क़ुरआन-ए-करीम किस तरह प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारे क़ुरआन हर जगह किस तरह पसंद किए जाते हैं खासतौर पर अनुवाद जो जिस भाषा में भी हुआ वे लोगों की तवज्जा अपनी तरफ़ खींचता है।

वास्तव में तनज़ानिया के एक मुअल्लिम साहिब ने बताया कि वह एक इलाक़े में

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

यह सोच है जो हमारे हर ओहदेदार में होनी चाहिए कि क़ौम के सरदार उसके ख़ादिम हैं
हर ओहदा या कोई ख़िदमत जिस पर किसी को निर्धारित किया जाता है अमानत हैं

हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने में से बेहतरीन लोग चुने और दुआ करके चुना करें
जिसको मैं किसी काम के लिए निर्धारित करता हूँ अल्लाह तआला उसकी सहायता फ़रमाता है और जो इच्छा करके ख़ुद-काम अपने सिर पर ले उसकी फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से सहायता नहीं होती (अल् हदीस)

अगर कोई किसी ओहदे के लिए ख़ाहिश रखता हो तो जमाअती निज़ाम में और हर इंतेख़ाबी फ़ोर्म में उसकी हौसलाशिकनी होनी चाहिए
जो भी मजलिस-ए-इंतेख़ाब के मैंबर बनें वे अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ अपनी राए देने का हक़ इस्तेमाल करें और दुआ के बाद और इन्साफ़ से अपनी नज़र में बेहतरीन व्यक्ति की सिफ़ारिश ख़लीफ़-ए-वक़्त को पेश करें
कुछ ओहदेदारों के मुताल्लिक़ शिकायात आती हैं कि उनके व्यवहारों में आजिज़ी नहीं होती और ऐसा इज़हार होता है जैसे इस ओहदे के बाद वह कोई ग़ैरमामूली शख़्सियत बन गए हैं

ओहदेदार अपने अंदर विनम्रता पैदा करें और जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे उसका हक़ अदा करते हुए अदा करने की कोशिश करें
अगर तर्बीयत का विभाग सक्रिय हो जाए तो बाक़ी विभाग ख़ुद बख़ुद मेरे अंदाज़े के मुताबिक़ कम से कम सत्तर फ़ीसद तक बेहतर रंग में काम करना शुरू कर देंगे

हर ओहदेदार का यह भी काम है कि जमाअत के लोगों से ज़ाती संपर्क रखकर उनसे ज़ाती ताल्लुक़ बढ़ाएं

निज़ाम-ए-जमाअत तो एक दूसरे के साथ हमदर्दी के जज़बात पैदा करने के लिए और एक दूसरे का ख़्याल रखने के लिए बनाया गया है

हम सब एक हैं। भाई भाई हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए अपनी अपनी शक्तियों के मुताबिक़ कोशिश कर रहे हैं
यही सोच है जो निज़ाम जमाअत को एक ख़ूबसूरत निज़ाम बना सकती है और यही सोच है जो हमें अल्लाह तआला के भी क़रीब कर सकती है

संसार की समस्त जमाअतों की मुल्की और स्थानिय आमिला और इसी तरह ज़ेली तन्ज़ीमों को इस बारे में बहुत सोच विचार और एक लाहे अमल की ज़रूरत है ताकि अपनी अमानतों का हक़ अदा कर सकें

अगर विभाग तर्बीयत सक्रिय है तो उमूर-ए-आम्मा के बहुत से मसायल हल हो जाते हैं जो जमाअत के लोगों के आपस के झगड़ों से ताल्लुक़ रखते हैं या जमाअत के लोगों के ग़लत कामों में ग्रस्त होने से ताल्लुक़ रखते हैं या मुख़ालेफ़ीन के किसी माध्यम से या कमज़ोर ईमान वालों के माध्यम से जमाअत में बेचैनी पैदा करने की जो कोशिश होती है इस से रखते हैं

जमाअत के लोगों को मैं बता दूं कि जो भी ख़त उनका यहां आता है, यहां पहुंच जाए वह खोला भी जाता है पढ़ा भी जाता है और उस पर कार्रवाई भी की जाती है

ओहदेदारों का काम है कि अल्लाह तआला ने उनके सपुर्द जो अमानतें कर दी हैं उनका हक़ अदा करें और अपने फ़रायज़ नेक नीयती से अदा करें। अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखते हुए अदा करें। अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अदा करें। ख़लीफ़ा वक़्त का सुलतान नसीर बनते हुए अदा करें। यहाँ तक कि लोगों के ईमानों की मज़बूती और उनको फ़ायदा पहुंचाने के लिए अदा करें
ओहदेदारान के फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियाँ

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 अगस्त 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है اِنَّ اللهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا (अल् निसा : 59) अर्थात निसंदेह अल्लाह तआला हुक्म देता है कि अमानत उनके योग्य लोगों के सपुर्द करो। फिर एक हदीस में आता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई ओहदा और ऐसा मुक़ाम जिसमें लोगों के मुआमलात देखने का इख़तेयार दिया गया हो या लोगों को निगरान निर्धारित किया गया हो तो यह भी एक अमानत है।

(सही मुस्लिम पुस्तक الامارةباب كراهةالامارةبغيرضرورة हदीस4719)

अतः इस लिहाज़ से हमारे जमाअती निज़ाम में भी हर ओहदा या कोई ख़िदमत जिस पर किसी को निर्धारित किया जाता है अमानत हैं।

हमारी जमाअत में जमाअती निज़ाम में हर सतह पर हम अपने ओहदेदार निर्धारित करते हैं। स्थानिय सतह से ले कर मर्कज़ी, मुल्की सतह तक। इसी तरह मर्कज़ में हैं फिर ज़ेली तन्ज़ीमों में इसी तर्तीब से नर्धारित किए जाते हैं। मर्कज़ी निज़ाम है या ज़े ली तंज़ीम का निज़ाम है हर जगह निचली सतह से लेकर मर्कज़ी सतह तक ओहदेदार निर्धारित किए जाते हैं और साधारणतः यह इंतेख़ाब के द्वारा होता है। अतः अल्लाह तआला का हुक्म है कि जब तुम यह ओहदेदार मुंतख़ब करो तो ऐसे लोगों को मुंतख़ब करो जो बज़ाहिर नज़र अर्थात तुम्हारी नज़र में इस काम के लिए बेहतरीन हैं और अपने काम की अमानत का हक़ अदा कर सकते हैं।

चुनाव के वक़्त दोस्तों या रिश्तेदारी का ख़्याल नहीं रखना चाहिए। कई दफ़ा कुछ ओहदेदार मर्कज़ी तौर पर या ख़लीफ़ा वक़्त की तरफ़ से बराह-ए-रास्त भी निर्धारित कर दिए जाते हैं और कोशिश यही होती है कि ग़ौर करके जो बेहतरीन व्यक्ति इस काम के लिए हो उसे निर्धारित किया जाए लेकिन कई दफ़ा अंदाज़े की ग़लती भी हो सकती है या ओहदे हासिल करने के बाद लोगों के स्वभाव बदल जाते हैं और जो आजिज़ी और मेहनत से और इन्साफ़ से काम करने की रूह एक ओहदेदार में होनी चाहिए वह नहीं रहती। तो फिर ऐसे शख़्स के व्यवहार की ज़िम्मेदारी उसी पर होगी न कि मुंतख़ब करने वाले पर। बहरहाल हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने में से बेहतरीन लोग मुंतख़ब करें और दुआ करके मुंतख़ब करें।

बहरहाल आम तौर पर यह कोशिश होती है कि जो शख़्स किसी काम के लिए निर्धारत किया जा रहा है वह ऐसा न हो जो आगे बढ़ बढ़कर सिर्फ इसलिए आ रहा है कि मैं ओहदेदार बन जाऊं। अगर कई दफ़ा ऐसे शख़्स का नाम जमाअत के अफ़राद की तरफ़ से किसी ओहदे के लिए प्रस्तुत हो कर आ भी जाए तो मर्कज़ को या ख़लीफ़ा वक़्त को अगर उसके हालात का पता हो तो उसे काम नहीं दिया जाता और यह बात ऐन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ है। एक रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दो शख़्स आए और कहा कि हमें अमुक काम सपुर्द कर दिया जाए, हम उस के योग्य हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसको मैं किसी काम के लिए निर्धारित करता हूँ अल्लाह तआला उसकी सहायता फ़रमाता है और जो इच्छा कर के ख़ुद--काम अपने सिर पर ले उसकी फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से सहायता नहीं होती।

(सही अल् बुख़ारी पुस्तक अल् हकाम बाब من لم يسأل الامارة اعانه الله عليها हदीस : 7146)

(सही अल् बुख़ारी पुस्तक अल् हकाम बाब الاحكام باب ما يكره من الحرص على الامارة हदीस : 7149)

उसके काम में बरकत नहीं पड़ती। इसलिए कभी ओहदे की ख़ाहिश करके ओहदा लेने की कोशिश नहीं होनी चाहिए।

हाँ ख़िदमत-ए-दीन का शौक़ ज़रूर होना चाहिए। मुझे अवसर मिले मैं ख़िदमत-ए-दीन करूँ और यह ख़िदमत किसी भी रंग में मिले उसे बजा लाने के लिए भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

अतः ओहदे की ख़ाहिश करना, किसी काम का निगरान बन कर उसे करने की ख़ाहिश करना पसंदीदा नहीं है।

हाँ ख़िदमत की भावना होना चाहिए चाहे वह किसी भी रंग में हो, यह पसंदीदा बात है।

अतः ये बातें चुनने वालों को भी हमेशा सामने रखनी चाहिऐं। क़ुरआन-ए--करीम के हुक्म को और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद को हमेशा सामने रखना चाहिए कि तुम्हारी नज़र में दुआ के बाद जो उचित योग्य लोग हैं किसी ख़िदमत के लिए, उन्हें मुंतख़ब करो। और यह कहो अगर कोई किसी ओहदे के लिए इच्छा रखता हो तो जमाअती निज़ाम में और हर इंतेख़ाबी फ़ोर्म में उस की हौसलाशिकनी होनी चाहिए और चुनने वाले को इन्साफ़ से अपना इंतेख़ाब करने का हक़ प्रयोग करना चाहिए।

साधारणतः इंतेख़ाब का यह तरीक़ है कि मुल्की मर्कज़ी सतह पर ओहदेदारान के मुंतख़ब करने की राय इंतेख़ाब के नतायज के साथ ख़लीफ़-ए-वक़्त को पेश की जाती है और ख़लीफ़-ए-वक़्त को इख़्तेयार है कि वह चाहे अधिक राए से पेश किए हुए नाम का चुनाव करे या किसी कम वोट हासिल करने वाले को चुने। कई दफ़ा उस शख़्स के बारे में कुछ मालूमात और कुछ ऐसे हालात का मर्कज़ और ख़लीफ़ा वक़्त को इलम होता है और आम आदमी को नहीं तो बहरहाल यह ज़रूरी नहीं है कि अधिक वोट वाले को ज़रूर निर्धरित किया जाए।

इसी तरह मुल्की जमाअतों के जो इंतेख़ाब हैं उनमें कायदे के अनुसार कुछ की मंज़ूरी मुक़ामी मर्कज़ी इंतेज़ामिया दे देती है और अगरकोई तबदीली करनी हो तो ख़लीफ़-ए-वक़्त से पूछ लेते हैं। कोशिश तो बहरहाल यह की जाती है कि जिस हद तक संभव हो अच्छे काम करने वाले ओहदेदार उपलब्ध हों लेकिन कुछ जगह जिस किस्म के लोग मोजूद हैं उनमें से ही चुनने पड़ते हैं लेकिन यहां फिर चुनने वालों को, मुंतख़ब करने वालों को ख़्याल रखना चाहिए कि अमानत का अपनी ताकतों के अनुसार बेहतरीन रंग में हक़ अदा करने वाले लोग मुंतख़ब हों और कभी किसी ख़ाहिश करने वाले को या दोस्ती की वजह से या रिश्तेदारी की वजह से या यह देखकर राय नहीं देनी चाहिए कि अक्सर हाथ किसी शख़्स के लिए खड़े हुए हैं तो मैं भी अपना हाथ खड़ा कर दूं। यह अल्लाह तआला के हुक्म की नफ़ी है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद की नफ़ी है।

जबकि जमाअती मर्कज़ी निज़ाम के इंतेख़ाबात तो इस वर्ष नहीं होने, हो चुके हैं लेकिन ज़ेली तन्ज़ीमों के इंतेख़ाबात होने हैं कुछ जगह अंसार के, ख़ुद्दाम के, लजना के, तो उन तन्ज़ीमों के मैंबरान को चाहिए कि जो भी मज्लिस-ए-इंतेख़ाब के मैंबर बनें वे अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ अपनी राय देने का हक़ प्रयोग करें और दुआ के बाद और इन्साफ़ से अपनी नज़र में बेहतरीन शख़्स की सिफ़ारिश ख़लीफ़-ए-वक़्त को पेश करें।

अगर हम इन्साफ़ के साथ अपने इस कर्तव्य को पूरा करने वाले बन जाऐंगे तो तभी जमाअती तरक़्क़ी में हमारा स्थान मुसबत होगा और हम अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हो जाऐंगे।

इसके साथ ही में ओहदेदारों को भी उनकी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाना चाहता हूँ। निसंदेह जमाअती ओहदेदार मुंतख़ब हो चुके हैं लेकिन उन्हें हमेशा अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए और हमेशा यह ख़्याल रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमें ख़िदमत का अवसर दिया है तो उसके फ़ज़लों को हासिल करने के लिए हमें हर किस्म के व्यक्तिगत लाभ से हट कर अपने काम को अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी हासिल करने के लिए सरअंजाम देना चाहिए।

कुछ ओहदेदारों के विषय में शिकायात आती हैं कि उनके व्यवहारों में विनम्रता नहीं होती और ऐसा इज़हार होता है जैसे इस ओहदे के बाद वे कोई ग़ैरमामूली शख़्सियत बन गए हैं।

मैं यह तो नहीं कहता कि फ़िरऔनियत पैदा हो गई लेकिन बहरहाल अपने आपको बड़ा समझने लग जाते हैं। खासतौर पर जिन ओहदेदारों को सीधे नियुक्त किया जाता है और वे वाक़िफ़ ज़िंदगी भी हैं उनमें अगर यह बात पैदा हो तो यह बिल्कुल काबिल-ए-बर्दाश्त नहीं। कुछ वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी को जनरल सैक्रेटरी बनाया गया तो उनके बारे में शिकायत है कि बड़ा घमंड वाला व्यवहार है। सलाम तक का उत्तर नहीं देते। ऐसे रवैय्ये दिखाने वाले अपनी इस्लाह करें और अल्लाह तआला ने जो ख़िदमत का अवसर दिया है तो ज़मीन पर झुकें और हर बच्चे बड़े से प्यार और आजिज़ी से मिलीं। आपको निर्धारित किया गया है कि जमात के लोग की ख़िदमत करें न यह कि उन पर किसी किस्म की अफ़्सर शाही का रोब डालें।

फिर कुछ ऐसे हैं जो अपने काम भी सही तरह सरअंजाम नहीं देते। यहां मेरी तरफ़ से भी कुछ मुआमलात रिपोर्ट के लिए जाते हैं तो उनकी दराज़ में पड़े रहते हैं जब तक याद-देहानी न कराओ, बार-बार न पूछो और छः महीने साल बाद फिर एक माफ़ी नाम लिख कर कह देते हैं कि हमारे से ग़लती हो गई। हम उन पर बरवक़्त कार्रवाई नहीं कर सके। अगर मर्कज़ के ख़ुतूत के साथ, ख़लीफ़ा वक़्त के ख़तों के साथ उनका यह सुलूक है और यह रवैय्या है तो फिर आम जमाअत के लोगों के विषय में उनसे किस तरह आशा की जा सकती है कि नेक सुलूक करते होंगे। इन लोगों को अपनी इस्लाह करनी चाहिए अन्यथा उनको ख़िदमत से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा। ओहदेदारान को कुछ और ज़िम्मेदारियों की तरफ़ भी मैं तवज्जा दिलाना चाहूँगा।

एक तो यही कि अपने अंदर विनम्रता पैदा करें और जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे उसका हक़ अदा करते हुए अदा करने की कोशिश करें।

हर वक़्त यह ज़हन में रहे कि ख़ुदा तआला हमारे ऊपर निगरान है। वह हमारी हर हरकत देख रहा है। कोई ओहदा मिलने के बाद हम हर किस्म की बंदिशों से आज़ाद नहीं हो गए बल्कि हम ख़ुदा तआला की पकड़ के नीचे ज़्यादा आ गए हैं। लोगों ने हमें निर्धरित किया है, हम पर विश्वास कर के ख़लीफ़ा वक़्त ने हमें इस ख़िदमत के लिए स्वीकार किया है तो हमें इस विश्वास को क़ायम रखने की कोशिश करनी है और अपनी समस्त सलाहियतें इस ख़िदमत को बे-हतरीन रंग में अदा करने के लिए खर्च करनी हैं। यह सोच होगी तो तभी सही काम करने की रूह भी पैदा होगी और जमाअत के लोगों का भी सहयोग रहेगा। अक्सर ओहदेदार जो शिकायत करते हैं कि कुछ विभागों में जमाअत के लोगों सहयोग नहीं करते निसंदेह ये लोगों की भी ज़िम्मेदारी है कि जिन लोगों को उन्होंने ख़ुद ख़िदमत के लिए चुना है उनसे सहयोग भी करें लेकिन साथ ही ओहदेदारान का भी काम है कि अपनी बेहतरीन उदाहरणे लोगों के सामने प्र-स्तुत करें। अब एक ओहदेदार की रिपोर्ट मिली कि वह अपनी आमद पर सही चंदा नहीं देता और न ही कम शरह से चंदा अदा करने की आज्ञा लेनी चाहता है तो ऐसा व्यक्ति फिर दूसरों के लिए क्या उदाहरण पेश करेगा? दूसरों को किस तरह कहेगा कि माली क़ुर्बानी करो? अतः अपने ज़ाती उदाहरण बहुत ज़रूरी हैं। बहुत ज़्यादा अस्तग़फ़ार की ज़रूरत है। अल्लाह तआला की तस्बीह करने की ज़रूरत है। अपनी हालतों के जायज़े लेने की ज़रूरत है।

अगर एक सैक्रेटरी तर्बीयत ख़ुद पाँच वक़्त बा-जमाअत नमाज़ अदा करने की तरफ़ तवज्जा नहीं देता तो दूसरों को किस तरह तलक़ीन कर सकता है कि नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दो। इसी तरह एक वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी और मुरब्बी ख़ुद नवाफ़िल अदा करने की तरफ़ तवज्जा नहीं दे रहा तो जमाअत के लोगों को वह किस तरह नसीहत कर सकता है कि इबादतों की तरफ़ तवज्जा करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी तरफ़ तो हमारी तवज्जा दिलाई है कि ग़ैर अहमदी मौलवी नसीहत करता है लेकिन उसके अमल उसकी नसीहत के मुताबिक़ नहीं हैं इसलिए उसकी बातों का प्रभाव नहीं होता।

(उद्धृत मल् फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 67 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमारे लिए तो हर क्षण बड़ी फ़िक्र से गुज़ारने की ज़रूरत है। हर क़दम बड़ा फूंक-फूंक कर कदम उठाने की ज़रूरत है। जब ये होगा तब ही हम अपनी अमानतों का हक़ अदा करने वाले होंगे।

सेक्रटरियान-ए-तर्बीयत अगर अपने उदाहरण क़ायम करते हुए प्यार और मुहब्बत के साथ जमाअत की तर्बीयत करें तो जमात के लोग में एक इन्क़लाबी तबदीली पैदा कर सकते हैं।

हर ओहदेदार को अपने विभाग की बेहतरी के लिए कम से कम दो नफ़ल भी रोज़ाना पढ़ने चाहिए कि अल्लाह तआला बरकत अता फ़रमाए। अगर तर्बीयत का विभाग सक्रिय हो जाए तो बाक़ी विभाग ख़ुद बख़ुद मेरे अनुमान के मुताबिक़ कम से कम सत्तर फ़ीसद तक बेहतर रंग में काम करना शुरू कर देंगे।

अतः हमेशा याद रखना चाहिए कि ओहदेदारों ने अपने उदाहरण क़ायम करने हैं और खासतौर पर जमाअत ओमरा ने, सदरान-ए-जमाअत ने और विशेषता सेक्रेटरी तरबियत ने बाक़ी ने भी करने हैं, यह नहीं कि बाक़ी न भी करें तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मेरा उन ओहदेदारों को ख़ास तवज्जा दिलाने का हरगिज़ यह मतलब नहीं है कि बाक़ी न भी करें तो फ़र्क़ नहीं पड़ता। प्रत्येक करेगा तभी जमाअती तरक़्क़ी सही तरह होगी। अगर अपने उदाहरण नहीं दिखाएंगे तो यह नहीं कि कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। बहुत फ़र्क़ पड़ता है। प्रत्येक ओहदेदार के अमल का फ़र्क़ पड़ता है। अगर सैक्रेटरी माल ख़ुद अपने चंदे सावधानी से अदा नहीं कर रहा तो दूसरों को क्या कहेगा, जैसा कि मैंने बताया और फिर उसके कहने में क्या बरकत होगी? अगर तब्लीग़ का सैक्रेटरी तब्लीग़ का हक़ अदा ही नहीं कर रहा तो जमाअत के लोगों को किस तरह तब्लीग़ के लिए उपदेश देगा? अतः प्रत्येक विभाग अहम है। इसी तरह ज़ेली तन्ज़ीमों के सदरान के ओहदे हैं और बाक़ी आमिला के मैंबरान के ओहदे महत्वपूर्ण हैं।

ज़ेली तन्ज़ीमों में भी प्रत्येक सतह पर अपने आपको सक्रिय करना होगा।

कुछ जगह सदर लजना के बारे में शिकायत आती है कि उनके रवैय्ये ठीक नहीं हैं। कुछ के नौ-मुबाईनात के साथ रवैय्ये ठीक नहीं हैं। उनको खींचने के बजाय उनको दौड़ाने का कारण बन रही हैं। इन नौ-मुबाईनात को बड़े ग़लत तरीक़े से कहा जाता है कि हम तुम्हारी इस्लाह करेंगे जबकि मेरे नज़दीक ख़ुद ऐसी सदर लजना की इस्लाह होनी चाहिए और यह इसलिए होता है कि चंद लोगों के पास ओहदे लंबे समय से चलते रहते हैं। मेमबरात लजना भी अपने इंतेख़ाब में नहीं देखतीं कि कौन योग्य है और कौन नहीं है जिसके नतीजे में ख़राबियां पैदा होती हैं। फिर शिकायात आती हैं और जब ख़राबियां पैदा हों तो और लोगों के ईमान को ठोकर लगती है। अगर चुनने वालियाँ ख़ुद अपना राय देने का हक ही इन्साफ़ से और अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हुए अदा नहीं कर रहीं तो फिर शिकायत भी नहीं चाहिए। अतः इंतेख़ाबात के वक़्त अमानतों के योग्य लोगों को मुंतख़ब करें तो शिकायात ख़त्म होंगी अन्यथा हम अपनी इस्लाह नहीं कर सकते।

ओहदेदारों से में यह भी कहूँगा कि वह स्टेजों पर बैठने के लिए नहीं हैं। हर ओहदेदार को अपनी डियूटी एक आम कारकुन बन कर देनी चाहिए।

एक नौमुबाईना महिला ने मुझ से वर्णन किया। इस जलसे पर बाहर से आई हुई महिला थी कि यहां जलसे पर एक बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने देखा कि सदर लजना डिसिप्लिन की डयूटी वाली लड़कियों के साथ डयूटी दे रही थी। यह तो बहरहाल इस सदर का फ़र्ज़ था। यह कोई ग़ैरमामूली काम नहीं जो उसने किया। अगर डियूटी न दे रही हो और हर जगह पर निगरानी न कर रही हो तो तब वह क़सूरवार है। अगर सदर ख़ुद इस तरह डयूटी न दे या चैक न करे तो वह अपनी अमानत का हक़ अदा नहीं कर रही लेकिन बहरहाल जो अपनी अमानत का हक़ अदा करने वाले ओहदेदार हैं वह दूसरों की इस्लाह का भी माध्यम बनते हैं और लजना में बनती हैं।

अतः यह सोच है जो हमारे हर ओहदेदार में होनी चाहिए कि क़ौम के सरदार उसके ख़ादिम हैं।

यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान है।

इसी तरह आम हालात में भी प्रत्येक ओहदेदार का यह भी काम है कि जमाअत के लोगों से ज़ाती संपर्क रख कर उनसे ज़ाती ताल्लुक़ बढ़ाएं। उनकी ख़ुशी ग़मी में शामिल हों। हर जमाअत के व्यक्ति को यह एहसास पैदा करवाएं कि निज़ाम-ए-जमात तो एक दूसरे के साथ हमदर्दी के जज़बात पैदा करने के लिए और एक दूसरे का ख़्याल रखने के लिए बनाया गया है। न कि कोई अफ़्सर है या कोई मातहत है। कोई बड़ा है या कोई छोटा है।

हम सब एक हैं। भाई -भाई हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए अपनी अपनी शक्तियों के मुताबिक़ कोशिश कर रहे हैं। यही सोच है जो निज़ाम-ए-जमाअत को एक ख़ूबसूरत निज़ाम बना सकती है और यही सोच है जो हमें अल्लाह तआला के भी क़रीब कर सकती है।

और यह सोच न रखने और इसके ख़िलाफ़ अमल करने से हम अल्लाह तआला की नाराज़गी भी मोल लेने वाले होंगे। एक रिवायत में आता है हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जिसको अल्लाह तआला ने लोगों का निगरान और ज़िम्मेदार बनाया है वह अगर लोगों की निगरानी, अपने फ़र्ज़ की अदायगी और उनकी ख़ैर ख़्वाही में कोताही करता है तो उसके मरने पर अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत हराम कर देगा और उसे जन्नत नसीब नहीं करेगा। (सही अल् बुख़ारी पुस्तक الاحكام باب من استرعى رعية فلم ينصح हदीस 7151-7150) अतः यह बहुत बड़ी चेतावनी है, बड़े भय का स्थान है, बड़ी फ़िक्र वाली बात है।

फिर एक रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तुम में से प्रत्येक निगरान है और अपनी रियाया के विषय में पूछा जाएगा। यह लंबी रिवायत है और जगहों का, निगरानों का भी यहां वर्णन है लेकिन जो अपने संबंध में है वह मैं पढ़ देता हूँ। फ़रमाया कि अमीर भी निगरान है। (सही अल् बुख़ारी पुस्तक अल् हकाम बाब قول الله تعالىٰ اطيعوا الله و اطيعوا الرسول...الخ हदीस 7138) अर्थात ओहदेदार भी। इस में ओहदेदा-रान भी शामिल हैं कि वे निगरान हैं और प्रत्येक से अपनी प्रजा के बारे में पूछा

जाएगा। प्रजा से मुराद वे लोग नहीं जिन पर हुकूमत की जाती है बल्कि वे लोग हैं जिनकी सहायता करने की, उनकी इस्लाह की, उनकी बेहतरी की ज़िम्मेदारी डाली गई है।

अतः इसी हदीस में उदाहरण दी गई है कि पति अपने घर का निगरान है, औरत अपने बच्चों की निगरान है। (सही अल् बुख़ारी کتاب الاحکام باب قول اللہ تعالیٰ اطیعوا اللہ و اطیعوا الرسول ... हदीस 7138) तो हुकूमत करने के लिए तो निगरान नहीं। उनकी तर्बीयत के लिए, उनकी बेहतरी के लिए योजना बनाने के लिए, उनकी ज़रूरियात पूरी करने के लिए निगरान है। अतः अगर यह ज़िम्मेदारी अदा नहीं कर रहे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ जन्नत हराम हो जाती है। अतः

वे लोग जो निगरान बनाए गए हैं, ओहदेदार बनाए गए हैं अगर सही तरह काम सरअंजाम नहीं दे रहे और अपने इलाक़े में सिर्फ ख़लीफ़-ए-वक़्त के नुमाइंदे, तथाकथित नुमाइंदे बने बैठे हैं वे ख़लीफ़ा वक़्त को भी बदनाम कर रहे हैं और ख़लीफ़-ए-वक़्त को भी गुनहगार बना रहे हैं।

जैसा कि मैंने उदाहरण दी थी कि रिपोर्टें महीनों नहीं भेजते। अब ऐसे लोगों के बारे में मेरे पास इस के इलावा और कोई हल नहीं कि अगर हक़ीक़त में वह अपनी इस्लाह नहीं करते तो उनको ख़िदमत से फ़ारिग़ कर दिया जाए और मैं फिर उनके गुनाहों में शामिल न हूँ। अतः मैं भी अल्लाह तआला से अस्तग़फ़ार करता हूँ। ये लोग भी अस्तग़फ़ार करें और अपनी इस्लाह करें। अल्लाह तआला करे कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को हमेशा ऐसे सुलतान नसीर अता हों जो अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हुए अपने काम सरअंजाम दें न यह कि सिर्फ ओहदा लेने के लिए ओहदे सँभाले हों।

यह भी एक बहुत तवज्जा देने वाली बात है जिसके बारे में आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह आदेश है कि

जो शख़्स मुस्लमानों के इजतेमाई मुआमलात का ज़िम्मेदार हो अल्लाह तआला उसकी हाजात और उद्देश्यों को पूरा नहीं करेगा जब तक वह लोगों की ज़रूरियात पूरी न करे।

अतः जहां यह ज़िम्मेदारी ख़लीफ़ा वक़्त की है वहां इन समस्त ओहदेदारों की भी है जो ख़लीफ़ा वक़्त के अपनी अपनी जमाअतों में नुमाइंदे हैं और ये ओहदेदारों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। केवल आमिला के इज्लासों में अपनी राय देकर और मीटिंगज़ में शामिल हो कर समझ लेना कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है यह काफ़ी नहीं है। लोगों की बेहतरी के लिए मंसूबा बंदी करना और फिर इस पर अमल दरआमद करवाना अत्यधिक ज़रूरी काम है। और जो माध्यम हमारे पास हैं उनके अंदर रहते हुए लोगों की ज़रूरियात पूरी करने का जो बेहतरीन हल हो सकता है वह हमें निकालना चाहिए। इस के लिए संसार की ज़रूरियात पूरी करने के लिए विभाग उमूर-ए-आम्मा भी है और विभाग सनअत-ओ-तिजारत है और इस तरह ज़ेली तन्ज़ीमों को इसके लिए अपना सक्रिय किरदार अदा करना चाहिए। निसंदेह हमारे पास माध्यम कम हैं लेकिन जो हैं उनके बेहतरीन प्रयोग से उचित योजना बना कर बहुत सारों की सहायता कर सकता है।

एक विभाग जो आजकल तक़रीबन समस्त जमाअतों के लिए एक चैलेंज बना हुआ है वह रिश्ता नाता का विभाग है।

इस के लिए बहुत बड़े योजनाबद्ध तरीक पर कार्य करने की ज़रूरत है। जमाअती निज़ाम को भी, ज़ेली तन्ज़ीमों के निज़ामों को भी एक दूसरे के साथ मिलकर ईआह काम करना होगा। यहां फिर जमाअती भी और ज़ेली तन्ज़ीमों के भी विभाग तर्बीयत को बहुत सक्रिय करने की ज़रूरत है।

फिर उसी विभाग की तरफ़ बात पलट जाती है। अगर हमारे नौजवानों की सही तर्बीयत हो तो हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद को हमेशा सामने रखें कि रिश्ते के मुआमले में दौलत, ख़ानदान और ख़ूबसूरती की बजाय दीन को फ़ौक़ियत दो।

(सही अल् बुख़ारी पुस्तक النکاح باب الاکفاء فی الدین हदीस 5090)

अगर यह हमारी प्राथमिकता हो जाएगी तो फिर लड़के भी और लड़कियां भी अपनी दीनी हालतों को बेहतर करने और ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ जोड़ने को तर्जीह देंगे और इस तरह हम अपनी अगली नसल को महफ़ूज़ कर सकेंगे अन्यथा आजकल दज्जाल जो चालें चल रहा है इस से मामूली कोशिशों से बचना बहुत मुश्किल है। इस के लिए तो बहुत वसीअ मंसूबा बंदी करनी होगी।

हर ओहदेदार को पहले अपने घर की इस्लाह की ज़रूरत है।

फिर जमाअत में इस बात की तरफ़ बहुत तवज्जा दिलाने की ज़रूरत है कि दीन को संसार पर प्राथमिकता देने का हमारा अह्द केवल अह्द ही न हो बल्कि हम में से प्रत्येक उस की अमली शक्ल बन जाए। जब ये होगा तभी हम दज्जाल का मुक़ाबला कर सकेंगे। अपनी नसलों को बचा सकेंगे। अपने ओहदों की भी रक्षा कर सकेंगे, उनका हक़ अदा कर सकेंगे और अपनी अमानतों का भी हक़ अदा कर सकेंगे। अतः संसार की समस्त जमाअतों की मुल्की और स्थानीय आमला और इसी तरह ज़ेली तन्ज़ीमों को इस बारे में बहुत सोच विचार और एक लायेहा-ए-अमल की ज़रूरत है ताकि अपनी अमानतों का हक़ अदा कर सकें।

जैसा कि मैंने उमूर-ए-आम्मा के काम की मुख़्तसेरन थोड़ी सी मिसाल दी थी।

हमारे निज़ाम में उमूर-ए-आम्मा का भी एक विभाग है और यह विभाग भी बहुत अहम समझा जाता है और है भी लेकिन साधारणतः यह तास्सुर पैदा हो गया है कि इस विभाग के काम लोगों को सज़ाएं दिलवाना या सख़्ती से लोगों को चेतावनी देना है। उमूर-ए-आम्मा के विभाग में काम करने वाले लोगों को संसार में हर जगह पता होना चाहिए कि उनका सिर्फ इतना काम नहीं है। ये तो काम का एक हिस्सा है और सख़्ती से चेतावनी देना तो बहरहाल उनका काम नहीं है। जब कोई हल न हो तो ये एक अंतिम सीमा होती है जहां सज़ा के तौर पर सिफ़ारिश की जाती है। यहां फिर मैं यही कहूँगा कि अगर विभाग तर्बीयत सक्रिय है तो उमूर-ए-आम्मा के बहुत से मसायल हल हो जाते हैं जो जमाअत के लोगों के आपस के झगड़ों से ताल्लुक़ रखते हैं या जमाअत के लोगों के ग़लत कामों में ग्रस्त होने से ताल्लुक़ रखते हैं या मुख़ालेफ़ीन के किसी माध्यम से या कमज़ोर ईमान वालों के माध्यम से जमाअत में बेचैनी पैदा करने की जो कोशिश होती है इस से ताल्लुक़ रखते हैं।

और कई जगह तर्बीयत के विभाग ने जमाअत के लोगों के साथ एक ख़ास ताल्लुक़ पैदा करके इस बारे में कोशिश भी की है तो जहां लोगों की शिकायात इस कोशिश से दूर हुईं और निज़ाम से बदज़नी दूर हुई वहां उन्होंने जमाअती फ़ैसलों का सम्मान भी किया और उसे सम्मान से स्वीकार भी किया और फिर मुख़ालेफ़ीन की जो मुनाफ़क़ीन या बुरी नियत वालों ने फ़ायदा उठाने की कोशिशें थीं वे भी नाकाम हुए। अतः शोबा तर्बीयत और उमूर-ए-आम्मा को कुछ मुआ-मलात में मिलकर काम करने की बहुत ज़रूरत है।

जैसा कि मैंने कहा उमूर-ए-आम्मा का काम तो बहुत अधिक है। जमाअत में आर्थिक स्थिरता पैदा करने के लिए प्रोग्राम बनाना उनका काम है। जमाअत के लोगों को नौकरी और अन्य माध्यमों से रोज़गार के लिए मार्गदर्शन और सहायता करना उनका काम है। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के कामों को सरअंजाम देना उनका काम है। प्यार और मुहब्बत से समझा कर झगड़ों को ख़त्म करवाना उनका काम है इत्यादि इत्यादि। लेकिन कज़ा के कार्यों में उमूर-ए-आम्मा का बहरहाल दख़ल नहीं है कि फ़ैसला करना शुरू कर दें।

हाँ क़ज़ा के फ़ैसलों को लागू करवाना उनका काम है लेकिन इस में फ़ैसला के बाद अगर कोई पक्ष उस पर अमल करने में बहाने बनाता है तो उमूर-ए--आम्मा के विभाग का काम है कि उसे आराम से समझाएँ कि इस पर अमल न कर के क्यों अपना दीन बर्बाद करते हो। थोड़े से सांसारिक लाभ की ख़ातिर क्यों अपना दीन बर्बाद करते हो। और फिर ऐसे लोग मेरा वक़्त भी ज़ाए करते हैं। ये बार-बार मुझे लिखते रहते हैं हालाँकि ख़ुद ग़लती पर होते हैं। तो बहुत से लोग समझ जाते हैं अगर उनको समझाया जाए। बहरहाल

उमूर-ए-आम्मा का काम सिर्फ सज़ाएं दिलवाना नहीं है बल्कि उन सज़ाओं से लोगों को बचाना है और इसके लिए उन्हें हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

अगर कहीं ग़लत काम होता देखें या समझें कि इस से जमाअती मुफ़ाद को नुक़्सान पहुंच सकता है तो फ़ौरन विभाग तर्बीयत को भी साथ मिला कर और मुरब्बीयान की सहायता भी हासिल कर के जहां वह जमाअती लाभ की हिफ़ाज़त करेंगे वहां लोगों के ईमान बचाने की भी कोशिश करेंगे और यह करनी चाहिए।

कई दफ़ा ओहदेदारों के व्यवहार निज़ाम के बारे में बद ज़न्नियाँ पैदा कर देते

हैं।

उदाहरणतः यह कि अगर किसी ने अपनी ज़रूरत के लिए ख़लीफ़ा वक़्त को दरख़ास्त दी है तो सदर जमाअत या अमीर जमाअत या उमूर-ए-आम्मा या अगर किसी ख़ास विभाग से संबंध है तो उसके काम करने वाले इस शख़्स से सख़्ती करते हैं कि हमारे द्वारा से क्यों नहीं दरख़ास्त दी। और मुआमला लटक जाता है बजाय इसके कि यदि मर्कज़ से उनको रिपोर्ट के लिए कहा गया है तो फ़ौरी रिपोर्ट भिजवाएं। फिर जब उत्तर नहीं जाते तो इस शख़्स को बदज़नी पैदा हो जाती है और बराह-ए-रास्त लोग मुझे लिखते हैं कि हमारी दरख़ास्तें नहीं पहुंचतीं। जिन दरख़ास्तों पर जब लंबा अरसा कार्रवाई नहीं होती तो उनको खासतौर पर बदज़नी पैदा होती है। लोग समझते हैं कि ख़लीफ़-ए-वक़्त को हमारी दरख़ास्त पहुंची ही नहीं है। ऐसी भी सूरत-ए-हाल हो जाती है। एक तरफ़ तो यह कि हमारे से क्यों नहीं पूछा, दूसरे यह कि क्योंकि हमारे से पूछा नहीं इसलिए इस पर कार्रवाई न करो। और फिर ग़लतफ़हमियाँ पैदा होती हैं ख़लीफ़-ए-वक़्त पर और ख़लीफ़-ए-वक़्त के दफ़्तर पर। हालाँकि ये सब ग़लत है।

हर ख़त यहां पहुंचता है। जो यहां आ जाए वह पढ़ा भी जाता है, खोला भी जाता है। यह नहीं कि उसको रोक लिया जाए।

और हर किस्म की दरख़ास्त संबंधित जमाअत को रिपोर्ट के लिए भिजवाई भी जाती है। तो बहरहाल जमाअत के लोगों को मैं बता दूं कि जो भी ख़त उनका यहां आता है, यहां पहुंच जाए तो वह खोला भी जाता है, पढ़ा भी जाता है और इस पर कार्रवाई भी की जाती है।

संबंधित जमाअत का विभाग उसके उत्तर में देर लगती है। तो ऐसे ओहदे-दारान को ख़ौफ़ करना चाहिए कि उनके यह अमल जमाअत के लोगों और ख़लीफ़-ए-वक़्त में दूरी पैदा करने वाले होते हैं। निज़ाम के बारे में बद ग़लत-फ़हमियाँ पैदा करने वाले होते हैं और इस तरह वह संबंधित ओहदेदार गुनहगार बन रहा होता है। किसी के ईमान से खेल कर वह अपने आपको गुनहगार बना रहा होता है। अतः ऐसे लोगों को ख़ौफ़ करना चाहिए।

हर ओहदेदार को यह समझना चाहिए और खासतौर पर जिनके सपुर्द जमाअत के लोगों की ज़रूरियात का ख़्याल रखने का काम है कि अगर उन्होंने अपने काम में सुस्ती दिखाई और लोगों के हक़ अदा न किए तो न सिर्फ अपनी अमानतों में ख़ियानत करने वाले हैं बल्कि अल्लाह तआला की पकड़ में भी आने वाले हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद है। रिवायत में आता है कि जो इमाम, इस से मुराद हर ओहदेदार है, जरूरतमंदो, दरिद्रों और ग़रीबों के लिए अपना दरवाज़ा बंद रखता है अल्लाह तआला उसकी ज़रूरियात के लिए आसमान का दरवाज़ा बंद कर देता है।

(सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब الاحکام باب ماجاء فی امام الرعیة हदीस 1332)

अतः अगर कोई ऐसा सोच रखने वाला ओहदेदार या उनके दफ़्तर में काम करने वाले कारकुन हैं तो अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हुए लोगों की हाजतें पूरी करने में जल्दी किया करें या कम से कम जल्द रिपोर्ट दिया करें, फिर मर्कज़ का काम है कि जायज़ा लेकर देखे कि किस हद तक यह हाजत पूरी की जा सकती है लेकिन उत्तर ही न देना और दरख़ास्त को एक कोने में रख देना यह बहुत बड़ा अपराध है। अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की जहां तक संभव हो कोशिश करें। हर नेक काम करने की तरफ़ तवज्जा रखें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जहां भी तुम अल्लाह तआला का तक़्वा इख़तेयार करो। अगर कोई बुरा काम करो तो उस के बाद नेक काम करने की कोशिश करो। यह नेकी बदी को मिटा देगी और लोगों से ख़ुशअख़लाक़ी और हुस्न-ए-सुलूक से पेश आओ।

(सुंन अल् तिरमेज़ी البر والصلة باب ماجاء فی معاشرة الناس हदीस 1987)

इसी तरह एक रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हो और मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो को यमन के दो अलैहदा हिस्सों की तरफ़ वाली निर्धारित करके भेजा तो यह नसीहत फ़रमाई कि

आसानी पैदा करना। मुश्किलें न पैदा करना। मुहब्बत-ओ-ख़ुशी फैलाना और नफ़रत न पनपने देना।

(सही अल् बुख़ारी पुस्तक المغازی باب بعث ابی موسیٰ و معاذ الی الیمن ... हदीस 4342-4341)

अतः यह वह नसीहत है जो हर ओहदेदार को जो लोगों से ज़्यादा वास्ता रखता है अपने लिए राहनुमा उसूल के तौर पर सामने रखनी चाहिए।

अतः यही वह तरीक़ है जिससे ओहदेदार जमाअत के अफ़राद की ख़िदमत का हक़ अदा कर सकते हैं और उनके ईमान की हिफ़ाज़त में भी किरदार अदा कर सकते हैं और जमाअत की इकाई को क़ायम रखने में भी अपना किरदार अदा कर सकते हैं और अपनी अमानतों के भी हक़ अदा कर सकते हैं और जब ये होगा तो एक ऐसा सुदंर समाज पैदा होगा जो सही इस्लामी समाज है और जिसके क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे और हमने उनको मान कर बैअत का अह्द किया है।

अतः हमेशा ओहदेदार यह बात याद रखें कि जमाअत के लोगों ने उन्हें मुंतख़ब किया है या आइन्दा करेंगे तो इसलिए कि वह अपनी अमानतों का हक़ अदा करें लेकिन अगर उन्होंने अपनी सोच के साथ, मुंतख़ब करने वालों ने अपनी सोच के साथ इंतेख़ाब नहीं भी तो अब ओहदेदारों का काम है कि अल्लाह तआला ने उनके सपुर्द जो अमानतें कर दी हैं उनका हक़ अदा करें और अपने फ़रायज़ नेक नीयती से अदा करें। अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखते हुए अदा करें। अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अदा करें। ख़लीफ़ा वक़्त का सुलतान-ए-नसीर बनते हुए अदा करें। जहां तक संभव हो लोगों के ईमानों की मज़बूती और उनको फ़ायदा पहुंचाने के लिए अदा करें।

और जब यह सोच रखेंगे और इस सोच के साथ अपने फ़रायज़ अदा करेंगे तो अल्लाह तआला आपके कामों में भी बरकत डालेगा और हर अवसर पर मुईन-ओ-मददगार भी होगा। अगर यह नहीं तो हम तक़्वा से दूर हटने वाले होंगे। ख़ुदा तआला से भी ख़ियानत कर रहे होंगे, ख़लीफ़ा वक़्त से भी ख़ियानत कर रहे होंगे और जिन लोगों ने भरोसा किया था सही या ग़लत उनके ईमानों को भी नुक़्सान पहुंचाने वाले होंगे।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मोमिन वह हैं जो अपनी अमानतों और ओहदों की रियायत रखते हैं अर्थात अमानत अदा करने और अपना अहद पूरा करने के बारे में कोई दक़ीक़ा तक़्वा और एहतियात का बाक़ी नहीं छोड़ते।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 239-240)

फिर एक जगह आप फ़रमाते हैं : "इन्सान की पैदाइश में दो किस्म के हुस्न हैं। एक हुस्न-ए-मुआमला और वह यह कि इन्सान ख़ुदा तआला की समस्त अमानतों और अह्द के अदा करने में यह रियाइत रखे कि कोई अमर जहां तक संभव हो उनके मुताल्लिक़ फ़ौत न हो। अमानतों के हक़ अदा करने में कोई अमल ज़ाए न हो। ".. ऐसा ही लाज़िम है' फ़रमाया " ऐसा ही लाज़िम है कि इन्सान मख़लूक़ की अमानतों और अह्द की निसबत भी यही लिहाज़ रखे। अर्थात हुक़ूक़कुल्लाह और हुक़ूकुल इबाद में तक़्वा से काम ले यह हुस्न मुआमला है या यूं कहो कि रुहानी ख़ूबसूरती है।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 218)

पस हर ओहदेदार को यह बात याद रखनी चाहिए कि हमने अपने अंदर रुहानी ख़ूबसूरती पैदा करनी है हम खासतौर पर ओहदेदार सबसे ज़्यादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इन बातों के संबोधित हैं।

हर अहमदी तक़्वा पर चलने और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का अह्द करता है लेकिन ओहदेदारों और वे जिनके सपुर्द जमाअती ख़िदमात हैं वे सबसे ज़्यादा इस बात के संबोधित और ज़िम्मेदार हैं कि अपने ओहदों और अमानतों की हिफ़ाज़त करें, जो हमारे सपुर्द ज़िम्मेदारियाँ हैं उन्हें तक़्वा से काम लेते हुए अपनी समस्त प्रतिभाओं के साथ अदा करने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

महत्वपूर्ण सूचना

नूर हस्पताल क़ादियान में ऐक्सरे (X-Ray) टेक्नीशियन की ज़रूरत है

शर्तें

(1) प्रत्याशी की आयु 37 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी ने किसी सरकारी या रजिस्टर्ड विभाग से एक्स-रे टेक्नीशन का कोर्स किया हो और ऐसे कोर्स को Paramedical Council of Punjab मानता हो (3) डॉक्टर का निर्देश पढ़ने के लिए अंग्रेज़ी अच्छी पढ़ना जानता हो (4) अनुभव रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी (5) सप्ताहिक अख़बार बदर में प्रकाशित आख़िरी सूचना के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (6) इच्छा रखने वाले प्रत्याशी अपने निवेदन प्रकाशित फ़ार्म पर अपने ज़िला अमीर स्थानीय अमीर/ सदर जमाअत/ मुबल्लिग़ इंचार्ज के हस्ताक्षर मोहर के साथ भिजवा सकते हैं (7) इंटरव्यू में सफ़लता की सूरत में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकतस्क जांच करवानी होगी और सिर्फ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होगा जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होगा (8) स्लैक्शन की सूरत में प्रत्याशी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आने जाने और मैडीकल के समस्त अख़राजात प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे (10) मज़कूरा असामी के लिए कोइ फ़ार्म नज़ारत दीवान से हासिल कर सकते हैं (11) प्रत्याशी जब इंटरव्यू के लिए तशरीफ़ लाएंगे तो अपनी असल तालीमी प्रामाणिकताएं अपने साथ ज़रूर लाएंगे

नोट:-लिखित परीक्षा साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशी उनको बाद में अवगत किया जाएगा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड143516-

मोबाइल : 09646351280 / 09682587713 दफ़्तर 01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

पमफ़लेट तक़सीम करने गए। जमाअती कुतुब भी बेचा करते हैं। इस से तब्लीग़ी राबतों में बढ़ोतरी होता है। कहते हैं एक दिन मुझे तीस किलो मीटर दूर से एक ग़ैर अज़ जमाअत शख़्स का फ़ोन आया कि वह क़ुरआन-ए-करीम का सवाहली अनुवाद ख़रीदना चाहते हैं। मुअल्लिम साहिब ने बताया कि क़ुरआन-ए-करीम तो उनके क़रीब के इलाक़े से भी मिल सकते हैं लेकिन उस शख़्स ने कहा कि मुझे जमाअत के अनुवाद और तफ़सीर का तरीक़ बहुत पसंद है। ठीक है औरों ने भी (अनुवाद) किए हैं लेकिन जो जमाअती तरीक़ अनुवाद का है वही मुझे पसंद है क्योंकि अक़ल उसको क़बूल करती है। मैं यही अनुवाद लेना चाहता हूँ।

माली में मुबल्लिग बिलाल साहिब हैं। कहते हैं जमाअत अहमदिया को क़ुरआन--ए-करीम की नुमाइश आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिली। एक तालिब-इल्म स्टॉल पर आए उन्हें क़ुरआन-ए-करीम के फ़्रैंच अनुवाद का परिचय करवाया गया कि वर्तमान अनुवाद में जमाaती फ़्रैंच अनुवाद सबसे बेहतरीन है। इस पर वे कहने लगे कि उनके घर में भी क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद मौजूद है जो कि जमाअती अनुवाद से बेहतर है। इस नौजवान ने यह कहा। बहरहाल वह अपने घर गया और वहां से क़ुरआन-ए-करीम ले आया और एक घंटे से ज़ायद वक़्त ये बताने के लिए लगाया कि हमारा, ग़ैर अहमदियों का अनुवाद बेहतर है। दोनों अनुवादों की तुलना करता रहा। बहरहाल इंसाफ़ पसंद तबीयत थी। आख़िर यह कहने पर मजबूर हो गया कि :

जमाअती अनुवाद बहुत आला है और हक़ीक़त में इस से क़ुरआन को समझना आसान है।

और फिर वह एक नुस्ख़ा क़ुरआन-ए-करीम का ख़रीद कर अपने साथ ले गया।

इस्लाम की सच्ची शिक्षा और अल्लाह तआला पर ईमान भी जमाअती तालीम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिटरेचर से किस तरह मुस्लमानों में भी क़ायम होता है।

जो नेक फ़ित्रत हैं किस तरह वे असर लेते हैं। एक वाक़िया वर्णन करता हूँ। जोरहाट बुक फेयर के अवसर पर एक दोस्त जालीमोस (Jalimaus) साहिब आए। यह कंप्यूटर इंजीनियर हैं। स्टाल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर और जमाअती पुस्तक देखने लगे। कुछ देर बाद उन्हों ने डयूटी पर मौजूद मुबल्लिग से गीली आँखों से संबोधित हो कर कहा मैं आज अगर बतौर मुस्लमान आपके सामने खड़ा हूँ तो सिर्फ जमाअत अहमदिया की वजह से। जमाअत का यह मुझ पर बड़ा एहसान है। उस से पूछा गया कि क्या आप अहमदी हैं और जमाअत ने आप पर क्या एहसान किया है? तो इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं अहमदी तो नहीं हूँ लेकिन मैं मज़हब से दूर होते होते दहरिया हो गया था परंतु मेरे घर में माता पिता के पास जमाअत अहमदिया की कुछ पुरानी पुस्तकें पड़ी हुई थीं जो कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम की लिखी हुई थीं। इन पुस्तकों का मैंने अध्ययन किया। इन पुस्तकों में हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने ख़ुदा तआला के बारे में जो दलायल पेश किए थे उन दलायल ने मेरी आँखें खोल दें। मैं लाजवाब हो गया और मेरा हस्ती बारी तआला पर ईमान क़ायम हो गया। इस तरह नास्तिक लोग भी जमाअत अहमदिया के लिटरेचर से अपने ईमान को दुबारा क़ायम करते हैं। फिर कहने लगा कि अब मैं जमाअत अहमदिया की वेबसाइट का अध्ययन करता रहता हूँ। जमाअत अहमदिया इस्लाम के समर्थन में जो दलायल पेश करती है इस से मेरा ईमान मज़बूत होता है और मेरे इलम में बढ़ोतरी होती है। जमाअत अहमदिया की वजह से मैं आज मुसलमान हूँ।

वेस्टर्न संसार में जहां कुछ मुल्कों में स्वीडन में, डेनमार्क इत्यादि में क़ुरआन-ए--करीम की तौहीन की जा रही है वहीं जब इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम पेश की जाती है तो उन्ही मुख़ालेफ़ीन के रवी्ये बदल जाते हैं। अतः आज जमाअत अहमदिया ही है जो क़ुरआन-ए-करीम के गरिमा और स्थान को बुलंद करने और उसकी सच्ची शिक्षा बताने में व्यस्त है।

एक जर्मन महिला ने कहा कि जमाअती लिटरेचर की और क़ुरआन-ए-करीम की नुमाइश लगी हुई थी। इस नुमाइश में इस्लाम के बारे में विभिन्न विषयों पर क़ुरआन और हदीस के हवालाजात पेश किए गए, इन मौज़ूआत के हवाले से जो इस बात को ज़ाहिर करते थे कि इस्लाम कोई इंतेहापसंद मज़हब नहीं है। उसने कहा आपकी जमाअत ने तो इस्लाम को आसान करके हमारे सामने पेश कर दिया है। अब कोई वजह नहीं कि इस्लाम की मुख़ालेफ़त की जाए और क़ुरआन-ए-करीम की मुख़ाले-फ़त की जाए।

क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत और इस्लामी तालीमात पर लिटरेचर का लोगों पर किस तरह असर होता है इस बारे में और वाक़िया भी वर्णन करता हूँ। गोला घाट बुक फेयर के अवसर पर रिपोर्ट देने वाले कहते हैं कि एक मुस्लमान प्रोफ़ैसर शबाना यासमीन साहिबा ने जब हमारे स्टॉल को देखा तो बहुत ख़ुश हुईं और सीधा आकर क़ुरआन-ए-मजीद का आसामी अनुवाद उठाया। आसाम में यह नुमाइश हो रही थी और अपने साथी प्रोफ़ैसर साहिब से कहने लगीं कि आज मेरा एक ख़ाब पूरा हो गया है। मैं एक लंबे अर्से से क़ुरआन-ए-करीम के आसामी अनुवाद की तलाश में थी। मेरे एक उस्ताद थे जिन्हों ने बारहा मुझसे क़ुरआन-ए-मजीद के आसामी अनुवाद का मुतालिबा किया था लेकिन मेरे पास यह अनुवाद न होने की वजह से क़ुरआन-ए--मजीद में उनको नहीं दे सकी। इस वजह से मुझे सख़्त नदामत होती थी और अपने मुस्लमान होने पर अफ़सोस होता था। मेरे उस्ताद की वफ़ात के बाद आज मुझे ये क़ुरआन मजीद मिला है अगर उसकी क़ीमत हज़ारों रुपया भी होती तो में उस वक़्त ज़रूर ख़रीद लेती।

यह महिज़ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि ऐसे दूर दराज़ इलाक़ाजात में जहां मुस्लमानों के पास क़ुरआन-ए-मजीद और दीगर बुनियादी इस्लामी कुतुब भी मौजूद नहीं हैं वहां जमाअत अहमदिया बुक स्टॉल लगा कर उनकी दीनी और रुहानी ज़रू-रियात पूरी कर रही है।

फिर धीमा जी बुक फेयर में एक महिला हैं बाणतीदो वारास (Banti Dowaras Bogagohaian) ये लार्ड शिवा का मंदिर बना रही हैं और इस की तब्लीग़ करती हैं हिंदू हैं। जब उसने हमारे स्टॉल को देखा तो हैरान रह गई कि इस इलाक़े में जहां मुस्लमानों की आबादी बहुत कम है वहां एक इस्लामी स्टॉल लगा है उसने हमारे स्टॉल पर आकर बात चीत की। बहुत ख़ुश हो कर वापस गई। अगले रोज़ फिर वापिस आई और स्टॉल में मौजूद समस्त लोगों के लिए फल इत्यादि लाई तथा क़ु-रआन-ए-मजीद को देखकर बहुत ख़ुश हुई। उसने क़ुरआन-ए-मजीद ख़रीदते हुए इस बात का इज़हार किया कि आज मेरी ज़िंदगी का एक ख़ाब आपने पूरा कर दिया है। क़ुरआन-ए-करीम ख़रीदा और उस को अपने सीने से लगाया और इस के साथ तस्वीर बनवाई।

चैक रीपब्लिक मशरिक़ी यूरोप का मुलक है। मुबल्लिग कहते हैं एक नौजवान हमारे स्टॉल पर आया। उसने बताया कि मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि ख़ुदा का वजूद है परंतु ये समझ में नहीं आता था कि कौन सा मज़हब मुझे ख़ुदा तक पहुंचा है?

मैंने बहुत अर्से तक बहुत सारे मज़ाहिब का मुकम्मल जायज़ा लिया है मगर अब मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि जमाअत अहमदिया ही समस्त मसायल का हल देती है जिससे मेरे दिल-ओ-दिमाग़ को तसल्ली मिलती है। मुझे यहां पर रूहानियत महसूस होती है।

अब बताएं ये मुल्ला लोग कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम को लोगों के दिल--ओ-दिमाग़ तक कौन पहुंचा रहा है?

अल्लाह तआला किस तरह तब्लीग़ के रास्ते खोलने के सामान पैदा फ़रमाता है इस के भी ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात हैं। पाकिस्तान में हम पर मुकम्मल पाबंदी है लेकिन कुछ दूसरी जगहों पर कुछ रोकों के बावजूद अल्लाह तआला आसानियां पैदा फ़र्मा देता है।

गिनी के मुबल्लिग लिखते हैं। पिछले दिसंबर में कैप वर्ड आईलैंड का दौरा किया तो इस दौरा के दौरान इस बात की शदीद ज़रूरत महसूस हुई कि हमारी जमाअत का रेडीयो प्रोग्राम होना चाहिए जिसकी सहायता से ज़्यादा तेज़ी के साथ जमाअत का पैग़ाम पहुंचाया जा सकता है मगर काफ़ी कोशिशों के बावजूद जमाअत वहां रजि-स्टर्ड नहीं हो रही थी जिसकी वजह से रेडीयो प्रोग्राम नहीं मिल सक रहा था। कहते हैं दौरा मुकम्मल होने के बाद गिनी बसाऊ से बहुत सारे लीफ़ लेट्स प्रिंट कर के कैप वर्ड भिजवाए गए। वहां उनको कसरत से तक़सीम किया गया और कहते हैं कि एक दोस्त ने लीफ़ लेट पढ़ने के बाद जमाती मिशन फ़ोन किया और कहा कि जमाअत के बारे में मालूमात हासिल करना चाहता हूँ। इस तरह उनसे मुलाक़ात हुई। उनको जमाअत के बारे में बताया गया। उन्होंने कहा कि आप अपनी तालीमात रेडियो पर क्यों नहीं बताते? इस पर उन को बताया गया कि हम कोशिश कर रहे हैं कि रेडीयो प्रोग्राम हमें नहीं मिल रहे। इस पर इस शख़्स ने कहा कि मेरा अपना रेडीयो स्टेशन है। मैं रेडीयो स्टेशन का डायरेक्टर हूँ। आप मेरे रेडीयो पर प्रोग्राम कर सकते हैं और जमाअत का पैग़ाम पहुंचा सकते हैं। इस तरह अल्लाह तआला ने एक नया रास्ता खोल दिया।

फिर माली के मुबल्लिग लिखते हैं। जलसा सालाना माली में कोली कौरव रीजन के एक गांव से एक दोस्त अहमद तोरे साहिब आए। उन्होंने बयान किया कि इस वक़्त माली में एक मसलक है जो नमाज़ और अरकान-ए-इस्लाम को इतनी एहमि-यत नहीं देता। अब ये मसलक जो नमाज़ को और अरकान-ए-इस्लाम को एहमियत नहीं देते लेकिन मुस्लमान है। अहमदी फिर भी ग़ैर मुस्लिम। और वे कहने लगे कि वे इसी फ़िरक़े का रुकन है लेकिन इस का दिल मुतमइन नहीं था। नेक फ़ितरत था। कहता है कि बेशक कहते तो हम यही हैं कि अरकान-ए-इस्लाम की कोई ज़रूरत नहीं। ईमान की और नमाज़ भी पढ़ने की ज़रूरत नहीं है लेकिन दिल मेरा उस पर संतोष नहीं है। एक दिन उन्होंने रेडियो लगाया तो वह जमाअत अहमदिया का रेडीयो था जिसमें नमाज़ पढ़ने का तरीक़ सिखाया जा रहा था जिसको उन्होंने बड़े इन्हिमाक से सुना और बाद में उन्होंने बार-बार जमाती रेडियो सुना तो दिल में यक़ीन हो गया कि ये लोग ही सच्चे मुस्लमान हैं लेकिन गांव वालों ने बताया कि उनको समस्त उल्मा इस्लाम से ख़ारिज कर चुके हैं। कहते हैं मैंने यहां लोगों को नमाज़ पढ़ते हुए, तहज्जुद की अदायगी करते देखा तो मेरा दिल मुतमइन हो गया। मैं दीन के मामले में ज़्यादा नहीं जानता लेकिन जितना इस्लाम के मुताल्लिक़ जानता हूँ आज उस को अपनी आँखों से देख लिया और मैं अहमदियत में शामिल होता हूँ।

अंतिम शरई पुस्तक क़ुरआन-ए-करीम जिसका पढ़ना, सुनना, रखना भी जैसा कि मैंने कहा है पाकिस्तान में अहमदियों पर बैन Ban) है, एक बहुत बड़ा अपराध है, वही पुस्तक है जिसके द्वारा जमाअत अहमदिया संसार में इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा रही है और संसार की इस्लाह कर रही है।

माएकरोनेश्या के मुबल्लिग शरजील साहिब कहते हैं। कुछ अरसा पहले एक शख़्स साइमन गेडन ने संपर्क करके क़ुरआन-ए-करीम का नुस्ख़ा हासिल किया। इस पर कुछ अरसा गुज़र गया। एक दिन अचानक उसका मैसिज आया कि मैं मुलाक़ात करना चाहता हूँ। जब मस्जिद आए तो कहने लगे कि पूरी ज़िंदगी बाइबल को बहुत तफ़सील से मैंने पढ़ा है लेकिन कोशिश के बावजूद कुछ भी समझ नहीं आई उस की तालीम दिल में नहीं बैठती लेकिन जब से क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना शुरू किया है तो ऐसे लगा कि उस का हर शब्द दिल में सीधा दाख़िल हो रहा है। वह इस बात पर हैरान थे कि ये कैसे हो सकता है कि मैं सारी ज़िंदगी ग़लत था और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम से महरूम रहा। अपनी माता के पास उसके बाद गए और उन्हें बताया कि मस्जिद जा रहा हूँ और इस्लाम में दाख़िल होने लगा हूँ। उनके वहां रिश्तेदार भी मौजूद थे उन्होंने कहा कि बड़ा ग़लत काम करने लगे हो, बहुत बुरा-भला कहा। इस पर मौसूफ़ ने कहा आप लोग जो करना चाहते हैं कर लें लेकिन मैं अपने दिल से मुस्लमान हो चुका हूँ और कहते हैं साइमन साहिब ने ख़ाकसार से इस बात का ज़िक्र किया तो उनकी आँखों में आँसू आने लगे। अब न सिर्फ जमाअत में दाख़िल हो गए हैं बल्कि बड़ी दिलेरी से इस्लाम की तब्लीग़ करते हैं।

जमात अहमदिया के द्वारा किस तरह संसार के विभिन्न देशों में सईद रूहें इस्लाम में दाख़िल होती हैं। अमीर साहिब

स्पेन लिखते हैं एक स्पेनिश दोस्त फ़रांसिस कोख़ीसूस साहिब काफ़ी अरसा तहक़ीक़ कर के जनवरी 2023 ई. में मुस्लमान हुए। इस्लाम को सच्चा दीन समझते थे लेकिन मुस्लमानों की मुंतशिर हालत पर मुतफ़क्किर रहते थे और ये बात समझते थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर के बाद मुस्लमान मुत्तहिद नहीं हो सके। उन्होंने इस्लाम की तारीख़ कुछ पढ़ी हुई थी। अब निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के तहत ही दुबारा मुत्तहिद हो सकते हैं। लेकिन निज़ाम ख़िलाफ़त को कहाँ तलाश करें? मार्च 2023 ई. में उनका हमारे एक अहमदी तारिक़ साहिब से राबिता हुआ। उन्होंने उसे अहमदियत पर तहक़ीक़ का मश्वरा दिया। इसलिए उन्होंने तीन माह अहमदियत के बारे में तहक़ीक़ की और पूर्ण संतुष्टि होने के बाद फिर उन्होंने बैअत कर ली और बाक़ायदा जुम्मे इत्यादि पर भी तशरीफ़ लाते हैं।

ताजिकस्तान से ताल्लुक़ रखने वाले एक दोस्त हैं ख़रोमोफ़तुर साहिब। आजकल किर्गीज़ स्तान में मुक़ीम हैं। कहते हैं मैं यहां काशग़र में काम करता हूँ। जहां मैं काम करता हूँ वहां अहमदी अहबाब भी थे।उन्होंने कुछ के नाम लिए। मैंने उनसे तक़रीबन तीन साल जमाअत के बारे में बात चीत की। उनसे बात चीत कर के आख़िर मुझे यक़ीन हो गया कि जमाअत अहमदिया ही हक़ीक़ी इस्लाम है और इमाम महदी अलैहिस्सलाम ही मसीह मौऊद हैं और मसीह नासरी फ़ौत हो चुके हैं। इसलिए ख़ाकसार बैअत करके जमाअत अहमदिया में शामिल हो गया। फिर दुआ के लिए कहा है, दुआ करें अल्लाह तआला मुझे ख़िदमत की तौफ़ीक़ दे और मुत्तक़ी बनाए और दस शरायत बैअत पर अमल करने की तौफीक दे।

रशिया से अताउल वाहिद साहिब मुबल्लिग लिखते हैं एक नौजवान को अल्लाह तआला ने इस्लाम अहमदियत की तरफ़ मुतवज्जा किया।

डेढ़ साल पूर्व उस से राबिता हुआ था। एक छोटे क़स्बे का रहने वाला नौजवान है

और उनके माता पिता तो मज़हब से दूर हो गए थे लेकिन मारसील की पत्नी ईसाई आर्थोडोक्स से ताल्लुक़ रखती थीं। इसलिए ये मारसील नौजवान हैं उनके बड़े भाई ईसाई हैं लेकिन उनकी तवज्जा उनके माता पिता की क़ौमियत की वजह से इस्लाम की तरफ़ हुई और उनके माता पिता पहले ही मुस्लमान थे। उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो माता पिता की इस तवज्जा की वजह से इस्लाम क़बूल किया लेकिन मुस्लमानों का सुन्नी इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन इस्लाम क़बूल करने के बाद भी कहते हैं कि तालीमात के मुताल्लिक़ बहुत से सवालात ज़हन में आते थे जिनके मुक़ामी मौलवी तसल्ली बख़श उत्तर नहीं दे सक रहे थे। इस बेचैनी में इज़ाफ़ा होता रहा और इसी दौरान अल्लाह तआला ने इंटरनैट के द्वारा से उनका राबिता जमाअत अहमदिया रशिया के साथ करवा दिया। यहां से मारसील साहिब को अपने सवालात के तसल्ली बख़श उत्तर मिल रहे हैं। उनका कहना है कि मैंने बहुत सी जगहों पर इस्लाम को समझने की कोशिश की लेकिन हक़ीक़ी इस्लाम अहमदियत ही में पाया है। इसलिए उन्होंने बैअत कर ली।

फ़िलपाइन के मुबल्लिग इंचार्ज कहते हैं कि यहां एक टापू में 139 बैअतें हुईं और बैअत करने वालों में एक स्कूल के प्रिंसिपल और दो इमाम भी शामिल हैं और चार इमाम मस्जिद बैअत कर के अहमदी हो चुके हैं। एक इमाम मस्जिद हाजी ईसा का कहना है कि जिस मस्जिद के वह इमाम हैं अब वह जमाअत अहमदिया ही की मस्जिद है। एक दोस्त ने इस मस्जिद से मुल्हिक़ा कुछ ज़मीन भी जमाअत को भेंट की है जिसमें इस वर्ष मिशन हाऊस बनाने का इरादा है ताकि स्थाई मुअल्लिम की तक़र्ररी हो सके। यह इमाम माली क़ुर्बानी करने वाले हैं। सिर्फ यह नहीं कि पैसे लेते हैं। उनकी दुकान है, कारोबार है, माली क़ुर्बानी करने वाले भी हैं और एक दिन कहने लगे कि मैंने जो पाँच सौ पेसौ की एक दिन माली क़ुर्बानी की थी अल्लाह तआला ने मेरा ईमान मज़बूत करने के लिए अगले दिन ही मुझे ग़ैर मुतवक़्क़े तौर पर एक लाख पेसौ कहीं से आमद करवा दी। अल्लाह तआला ख़ुद इस तरह सईद फ़ित्रत लोगों की राहनुमाई करता है।

माली के रीजन सिकासो के मुबल्लिग लिखते हैं मरवान कोली बाली साहिब अहमदिया मिशन हाऊस आए और कहा कि वह बैअत करना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि वह रेडीयो अहमदिया शौक़ से सुनते थे और जमाअत की अक्सर बातों से मुतमइन थे लेकिन बैअत करने को दिल नहीं मानता था। कहने लगे : कल जब मेरी रेडीयो सुनते सुनते आँख लग गई तो मैंने ख़ाब में देखा कि आसमान में चांद निहायत रोशन है और चांद में दो अश्ख़ास की तस्वीरें नज़र आ रही हैं। एक तस्वीर बड़ी और एक छोटी है और क़रीब खड़े बच्चे शोर मचा रहे हैं कि यह इमाम महदी अलैहिस्सलाम और उनके ख़लीफ़ा की तस्वीर है। वह आ गए हैं। मरवान साहिब कहते हैं कि फिर उन्होंने ख़ाब में ही क़रीब खड़े बुज़ुर्ग से दरयाफ़त किया कि क्या आपको भी तस्वीर नज़र आ रही है, जिस पर बुज़ुर्ग ने तो नफ़ी में उत्तर दिया लेकिन कहते हैं मेरा दिल मुतमइन हो गया कि अहमदियत ही सच्ची जमाअत है जो इमाम महदी के ज़हूर का ऐलान कर रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लिफ़ा की तस्वीरें देखें तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी तस्वीर को पहचान लिया। साथ मेरी तस्वीर भी थी और कहा यही तो मैंने ख़ाब में देखा था।

स्पेन के अमीर साहिब लिखते हैं कार्लोस साहिब ने इस साल बैअत की है। यह पहले मुस्लमान हो गए थे। अब्दुल सलाम उनका नाम रखा गया था। उन्होंने ख़ाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा कि हुज़ूर उन्हें फ़र्मा रहे हैं कि आओ! हे अमन की तरफ़ आ जाओ। ख़ाब के बाद एक रोज़ उनकी पत्नी इंटरनैट पर उन्हें कुछ दिखा रही थी कि उनकी नज़र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर पर पड़ी तो उन्होंने कहा यह तो वही शख़्स है जो मुझे ख़ाब में अमन की तरफ़ बुला रहा था। इस पर उन्होंने अहमदियत के बारे में तहक़ीक़ शुरू कर दी और कुछ दिन बाद दुबारा ख़ाब देखा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनको फ़रमाया कि मैं इमाम महदी और मसीह हूँ। उनका दिल तो इस ख़ाब के बाद अहमदियत का क़ायल हो गया था लेकिन बैअत नहीं की थी और तहक़ीक़ जारी रखी। तीसरी दफ़ा फिर उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा जब आप अलैहिस्सलाम के चेहरे पर नाराज़गी के आसार थे। इस पर उन्होंने फ़ौरी तौर पर जमाअत से संपर्क किया और बैअत कर ली।

बावजूद मुख़ालेफ़ीन की इंतेहाई कोशिशों के नौमोबाईन मज़बूती ईमान का किस तरह इज़हार करते हैं।

बुर्कीना महदी आबाद के एक नासिर सईदो जीका साहिब वर्णन करते हैं कि जब हमारे गांव की अक्सरियत ने अहमदियत क़बूल कर ली तो सऊदी अरब में मुक़ीम मेरे एक कज़न ने समस्त अख़राजात बर्दाश्त करके हमें सऊदी अरब बुलाया। वहां पहुंचे तो उसने हमें ख़ाना काअबा की ज़यारत करवाते हुए कहा कि यह इस्लाम के मुक़द्दस मुक़ामात हैं। इस्लाम यहां से शुरू हुआ था पाकिस्तान से नहीं। इसलिए यहां पर क़ायम वहाबी अक़ीदा इख़्तेयार करो और अहमदियत छोड़ दो। मैंने कहा तुमने इसलिए हमें यहां बुलाया था। उसने इस बात पर सिर हिलाया। फिर मैंने कहा कि इस मुक़द्दस मुक़ाम के साय में खड़ा हो कर दुआ करता हूँ कि मेरी ज़िंदगी में कोई ऐसा अवसर न आए कि मुझे अहमदियत छोड़नी पड़े। कहते हैं मैंने ख़ाना काअबा में यह दुआ की कि अल्लाह तआला मुझे इस से पहले हालत-ए-ईमान में मौत दे दे, कभी ऐसा अवसर न आए कि मैं ईमान से फिरूँ। बहरहाल कहते हैं उसके बाद मैं जल्द बुर्कीना फासो आगया। ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि वही इनका अज़ीज़ जो कज़न था उनको और अज़ीज़ों रिश्तेदारों से मिलने के लिए बुर्कीना फासो आया तो अल्हाज इबराहीम साहिब ने उसे तब्लीग़ की और वे भी अहमदी हो गया। बहरहाल कहते हैं जो हमें शिकार करना चाहता था वह ख़ुद अहमदियत का शिकार हो गया।

फिर मुख़ालेफ़त में साबित क़दमी के बारे में बुर्कीना फासो के ही अमीर साहिब वर्णन करते हैं कि डोरी रीजन के मुअल्लिम उम्र डीको (Dicko) साहिब हैं। वह कहते हैं कि एक दिन वहाबी मुल्लां का एक टोला उनके घर आया और अहमदियत तर्क करने को कहा और धमकी दी कि अन्यथा तुम्हें क़तल कर देंगे। उम्र डीको साहिब ने कहा कि बेशक मुझे क़तल कर दो लेकिन अहमदियत छोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता और न ही मैं तब्लीग़ से बाज़ आऊँगा। तब्लीग़ भी करूँगा। इस पर वह शदीद ग़ुस्से में चले गए। अगले रोज़ कुछ हथयारों के साथ लोग उनके घर आए। इस पर अहमदी अहबाब ने आपको मश्वरा दिया कि आप डोरी चले जाएं। उस रात मुअल्लिम साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ दुआ में मशग़ूल रहे और अल्लाह तआला से राहनुमाई चाही। मुअल्लिम साहिब ने ख़ाब में इस्माईल नामी एक शख़्स को देखा। उसने कहा कि उमर! तू कहाँ जाता है? उत्तर दिया डोरी। इस पर उसने कहा ठीक है। इसलिए इस ख़ाब के बाद अगली सुबह उन्होंने हिज्रत कर ली और उनको फिर एक रिक्शे वाले ने महफ़ूज़ तरीक़े से वहां पहुंचा दिया और डोरी पहुंचते ही कहते हैं उनकी पत्नी का फ़ोन आया कि हथयारों के साथ लोग दहश्तगर्द आए हैं और आपको ढूंढ रहे हैं। इस तरह अल्लाह तआला ने उनकी जान भी बचा दी।

नाईजीरिया की ओसन (Osun) स्टेट के एक गांव के रिहायशी बदर अदरेमी (Badr Aderemi) साहिब को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली। खेती बाड़ी करते हैं और अहमदियत क़बूल करने से क़बल गांव के मुख़ालिफ़ ग्रुप के, हमारी जमाअत के मुख़ालिफ़ ग्रुप के सरगर्म रुकन थे। गांव में कहते हैं जमाअत अहमदिया के मिशनरी ने मुझे जमाअत से परिचय करवाया तो मुझे जमाअत अहमदिया के मुताल्लिक़ मज़ीद जानने में दिलचस्पी पैदा हुई। कुछ अरसा तहक़ीक़ करने के बाद मैंने अहमदियत क़बूल कर ली। बैअत के बाद गांव वालों की तरफ़ से शदीद मुख़ालेफ़त का सामना करना पड़ा। कहते हैं मुझे कहा गया कि तीन महीने हैं अगर तुमने अहमदियत न छोड़ी तो तुम्हारा घर तबाह कर देंगे। बड़ी परेशानी हुई। एक रोज़ में खेतों में काम करने के लिए गया। शदीद तूफ़ान आ गया। कहते हैं मुझे यक़ीन था कि मैं वापस घर जाऊँगा तो मेरा घर इस तूफ़ान की नज़र हो चुका होगा। बहरहाल जब घर गया तो क्या देखता हूँ कि मेरे घर के दाएं बाएं सारे घर तबाह हो चुके हैं, तक़रीबन पच्चास के क़रीब घर तबाह हो गए न सिर्फ घरों की छतें बल्कि पूरे के पूरे घर ही मलबा बन गए और इस दौरान मुख़ालेफ़ीन की यह बात भी ज़हन में आ जाती कि चूँकि तुमने अहमदियत क़बूल की है इसलिए एक रोज़ जब तुम वापस आओगे तो अपना घर तबाह-ओ-बर्बाद देखोगे। मैंने दुआ की कि अल्लाह! अगर यह जमाअत तेरी जमाअत है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वही मौऊद महदी हैं जिनकी ख़ुशख़बरी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी तो मेरे घर को गिरने न देना। बहरहाल जब बारिश थम गई तो मैं घर के अंदर दाख़िल हुआ। देखा कि हर कमरा महफ़ूज़ था और किसी किस्म का कोई नुक़्सान नहीं हुआ था और जबकि इर्द-गिर्द के बहुत सारे घर तबाह हो गए थे। कहते हैं इस वाक़िया के बाद मेरा अहमदियत की सच्चाई पर ईमान पुख़्ता हो गया और मुझे यक़ीन हो गया कि यह जमाअत वाक़ई एक इलाही जमाअत है। बहरहाल संसार के विभिन्न देशों में अल्लाह तआला के ये सुलूक कि हर जगह अल्लाह तआला का समर्थन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ नज़र आता है जिन्हों ने हमें हक़ीक़ी इस्लाम की तालीम दी, ये सबसे बड़ी जमाअत अहमदिया की सच्चाई की दलील है। ये वाक़ियात और ये बातें अल्लाह तआला के फ़ज़ल से लोगों के ईमान को मज़बूत कर रहे हैं। अल्लाह तआला संसार की भी नज़रें खोले और उनको ईमान और यक़ीन के साथ

क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस वक़्त मैं ने मरहूमीन का वर्णन करना है, कुछ जनाज़े हैं, उनका वर्णन करूँगा लेकिन यह भी साथ कह दूं कि इन दिनों में जो कोविड (Covid) दुबारा फैल रहा है इसलिए लोगों को भी इस बारे में एहतियात करनी चाहिए।

मरहूमीन के ज़िक्र में पहले वर्णन है

श्रीमती अम्तुल हादी साहिबा पत्नी श्रीमान पैर ज़ियाउद्दीन साहिब यह हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी थीं। बानवे वर्ष की उम्र में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे पीर शब्बीर अहमद इस्लामाबाद के नायब अमीर हैं और ब्रीगेडीयर दबीर अहमद, फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल में आजकल ऐडमिनिस्ट्रेटर हैं। रिटायरमैंट के बाद उन्होंने वक़्फ़ किया था। उनकी दो बेटियां हैं।

उनके बेटे ने लिखा कि हम बहन भाईयों ने हमेशा अपनी माता को बचपन से ही नमाज़ों और तिलावत में बाक़ायदा पाया और बाक़ायदा चंदा देने वाली थीं। एम.टी.ए देखना उनका मामूल था। जमाअती तहरीकात में हिस्सा लेती थीं। तहरीक जदीद के दफ़्तर अव्वल की चंदा दहिंद थीं। 1971 ई. में जो पाक भारत जंग हुई इस में अमतुल हादी साहिबा के पति ब्रीगेडीयर ज़ियाउद्दीन साहिब मशरिक़ी पाकिस्तान में थे जो अब बंगलादेश है और वहां वे बड़ा लंबा अरसा रहे। पीर दबीर ये कहते हैं कि मेरी माता भी और छोटी बहन भी वहीं थी। कुछ अर्से के बाद माता पिता ने माता और छोटी बहन को भेज दिया। वह परेशान रहती थीं लेकिन कभी उन्होंने अपनी परेशानी का इज़हार हम बच्चों पर नहीं किया बल्कि हमें हौसला देती रहें और छः महीने के बाद फिर ब्रीगेडीयर साहिब वहां से वापस आए। हमेशा ईदों पर तलक़ीन करती थीं कि ग़रीबों का ख़्याल रखो, उनको ईदियाँ दो। ह्यूमैनिटी फ़रस्ट में हर साल दो मर्तबा ख़तीर रक़म भिजवाती थीं। कुँवें और हैंडपंप लगवाने के लिए, बच्चों की पढ़ाई के लिए, ग़रीबों के खाने का बंद-ओ-बस्त करने के लिए। इस का डाक्टर नूरी साहिब ने भी वर्णन किया है। उनकी बेटी अमतुल कबीर तल्अत कहती हैं कि बाआवाज़ तिलावत किया करती थीं। किसी की ग़ीबत नहीं करती थीं। दूसरों को भी इस बात से मना करती थीं। ख़िलाफ़त से बहुत अक़ीदत का ताल्लुक़ था। बाक़ायदा एम.टी. ए देखतीं। बाक़ायदा ख़ुतबा सुन्नतें और हमें हर अवसर पर समझाती थीं कि सिलसिला की कुतुब पढ़ने का बहुत फ़ायदा है। उनको ख़ुद भी बड़ा शौक़ था और हर समय सिरहाने पर कुतुब पड़ी होती थीं जो ज़ेर मुताला होती थीं। बहुत मिलनसार और ताल्लुक़ रखने वाली थीं। उनकी नवासी कहती हैं कि जब भी हम क़ुरआन-ए-करीम की कोई नई सूरत याद करते तो हमें इनाम दिया करती थीं, हौसला-अफ़ज़ाई करतीं। कहती हैं मुझे याद है कि बाक़ायदा फ़ज्र की नमाज़ के बाद बहुत लंबी तस्बीह और दुआएं करती थीं और मुझे भी तलक़ीन करती थीं सुबह तैयार होने के बाद क़ुरआन को तफ़सीर से पड़तीं। हदीकतुल् सालेहीन पड़तीं, रुहानी ख़ज़ायन पड़तीं, फिर ना-शतादान करतीं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी नेकियां उनके बच्चों में भी जारी फ़रमाए।

अगला वर्णन है श्रीमान साक़िब कामरान साहिब जो हमारे वाक़िफ़ ज़िंदगी थे।

आजकल नायब वकील समई बस्री थे जो बयालिस साल की उम्र में बक़ज़ाए इलाही वफ़ात पा गए। डाक्टरों का ख़्याल यही है कि फ़ूड पोयज़निंग (food poisoning) हुई। लेकिन एक ट्रेजडी (tragedy) यह भी हुई कि साक़िब साहिब की वफ़ात से तक़रीबन पैंतालीस मिनट क़बल उनका एक बेटा आरब कामरान, उन्होंने भी वही खाना खाया था वह भी फ़ौत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

साक़िब कामरान साहिब के पड़दादा हज़रत चौधरी मौला बख़श साहिब तलवंडी झंगलां ज़िला गुरदासपुर ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। कामरान साहिब ने वक़्फ़ किया, जामिआ में दाख़िल हुए और वहां से फिर पास कर के विभिन्न जगहों पर निर्धरित रहे। अल्लाह तआला ने उनको एक बेटी और दो बेटों से नवाज़ा। रूमेसिया काशिफ़ा सतरह साल की है और ग़ालिब कामरान तेराह साल का और तीसरा बेटा जो है इस की वफ़ात उनके साथ ही हो गई थी। पूरा ख़ानदान ही बीमार हुआ था बाक़ी सबको अल्लाह तआला ने बचा लिया।

जामिआ पास करने के बाद उनकी नज़ारत इस्लाह-ओ-इरशाद मुक़ामी में चयन हुआ। फिर हदीस के मज़मून में उनको आगे की पढ़ाई के लिए चुना गया। फिर उसके बाद वकालत तालीम तहरीक-ए-जदीद के तहत सीरिया उनको अरबी की आला तालीम के लिए भेजा गया लेकिन वहां के हालात की वजह से या किसी और वजह से वापस आ गए। फिर उस के बाद दिसंबर 2018 ई. में तहरीक जदीद के स्टूडीयोज़ का आग़ाज़ हुआ तो उनको नायब वकील सुमई बस्री तहरीक जदीद निर्धारित किया गया और वफ़ात तक वह इसी ओहदे पर ख़िदमत अंजाम देते रहे। अठारह साल अल्लाह तआला ने उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ दी।

उनकी माता सादिका बेगम साहिबा कहती हैं कि कामरान की पैदाइश वक़्फ़-ए--नौ की तहरीक से पहले हुई थी उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्ला को दरख़ास्त की कि मेरे दो छोटे बेटे वक़्फ़ नौ में शामिल कर दें। हज़रत ख़लीफ़ अलराबे ने उनकी दरख़ास्त मान ली और शामिल कर लिया।

उनकी पत्नी कहती हैं। बहुत प्यारी शख़्सियत थे। शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। नमाज़ों को फ़िक्र से अदा करने वाले, ख़िलाफ़त के साथ शिद्दत से मुहब्बत करने वाले, जमाअत की अमानतों की हिफ़ाज़त करने वाले, हर रंग में, हर रिश्ते में पुरख़लू मुहब्बत करने वाले, ख़्याल रखने वाले और हर शख़्स का ख़्याल रखने वाले, जमाअत के हर फ़र्द का ख़्याल रखने वाले और कोशिश होती थी कि अपने बच्चों की भी तर्बीयत बेहतर रंग में करें।

उनकी माता ने भी लिखा है कि क़ुरआन-ए-करीम के हुक्म कि अपने माता पिता के सामने उफ़ न कहो कभी ऊंची आवाज़ में उन्होंने बात नहीं की। दूसरों के राज़ छिपाने वाले, दफ़्तरी राज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले, उनकी पत्नी कहती हैं कि हम कई दफ़ा बाहर से बातें सुनते थे तो उनसे पूछते थे कि यह बात हुई है तो कहते थे यह अमानत है मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। नमाज़ें बाजमाअत पढ़ने की तरफ़ बहुत तवज्जा थी। बच्चों को भी तलक़ीन किया करते थे और हमेशा कोशिश होती कि घर का, बच्चों का और बीवी का ख़्याल रखें। उनकी ज़रूरियात को पूरा करें। हर रिश्ते के साथ वफ़ा का व्यवहार था।

उनकी बेटी रूमेसा कहती हैं कि मेरे माता पिता निहायत ही आजिज़, नेक, ग़री-बपर्वर, बाफ़हम, दूर अंदेश, इताअत गुज़ार और तहज्जुद पढ़ने वाले शख़्स थे। तर्बीयत करने का अजीब तरीक़ा था। अपनी आँख के इशारे से ही बात समझा देते। हर वक़त अच्छी तर्बीयत करने की फ़िक्र में लगे रहते और हमेशा बताते कि तुम लोग वाकिफ-ए-नौ हो इसलिए इस बात का एहसास रखो। कहती हैं बहुत सारी बातें मैं उनसे पूछ लेती थी उनके उत्तर देने में कभी नहीं झिजकते थे चाहे कैसी भी कैफ़ीयत हो।

रौहान अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला जो आजकल असीरराने राहे मौला हैं। यह कहते हैं कि मुझे उनकी ज़ेर-ए-तर्बियत और ज़ेर निगरानी लंबा अरसा काम करने का अवसर मिला। हमेशा एक शफ़ीक़ दोस्त की तरह मेरी राहनुमाई की। आप नरम मिज़ाज, अच्छी शख़्सियत के मालिक और बेहतरीन क़ायदाना सलाहियतों के हामिल थे। एक मुख़लिस ख़ादिम सिलसिला थे। उनकी सख़ावत और हमदर्दी भी थी।

इन असीरान के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उनकी भी जल्द रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

और मरहूम से अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनके परिजनों को बच्चों को, बीवी को, माता को सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनके बच्चों में उनकी नेकियां जारी फ़रमाए।

तीसरा वर्णन प्रोफ़ैसर डाक्टर मुहम्मद दाऊदा साहब कोतोनौ बेनिन का है। उनकी भी पिछले दिनों में साठ साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनका ताल्लुक़ बेनिन के दाऊदा ख़ानदान से था जिस ख़ानदान के लोगों ने बेनिन में सबसे पहले अहमदियत क़बूल की। बेनिन के सबसे पहले अहमदी श्रीमान ज़िकरुल्लाह दाऊद साहिब मरहूम उनके ताया थे। उनके माता पिता ईसा दाऊद मरहूम ताहयात बेनिन के नैशनल नायब रहे। 1980 ई. में जब आप तालिब-इल्म थे तो आपने ज़िकरुल्लाह दाऊद साहिब मरहूम की तब्लीग़ से अहमदियत क़बूल करली

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 21 SEPTEMBER 2023 Issue No. 38

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

थी। क़बूल-ए-अहमदियत के बाद अपने ताया के साथ अपने माता पिता को तब्लीग़ करते रहे और कुछ देर के बाद उनकी तब्लीग़ से माता और पिता भी अहमदी हो गए। 2022 ई. में सेनेगाल की यूनीवर्सिटी से जीव विज्ञानं (Zoology) में पी. एच .डी की डिग्री हासिल की। इसके बाद वापस आकर बेनिन में पाराको यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर के तौर पर निर्धारित हुए। अपनी क़ाबिलियत के बलबूते पर बहुत सारी मुल्की और ग़ैर मुल्की कान्फ्रैंसज़ में शरीक होते थे। लंबा अरसा बतौर सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया बेनिन ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। ज़माना तालिब इलमी में ही उन्होंने वसीयत कर ली थी और यूं बेनिन के अहमदियों में से शुरू के बल्कि लिखा है कि सबसे पहला मूसी होने का एज़ाज़ उन्हें हासिल हुआ।

उनकी पत्नी रिहाना दाऊदा साहिबा जो उस वक़्त लजना की नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत हैं कहती हैं कि मैंने शादी के बाद अपने ख़ावंद की तब्लीग़ से अहमदियत क़बूल की। उन्होंने मुझे यस्सरनल क़ुरआन और फिर क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ाया। बहुत ही शरीफ़, दयानतदार, इन्सानियत का दर्द रखने वाले ग़रीबपर्वर इन्सान थे। जमाती कामों के लिए हर वक़त तैयार रहते थे। बाक़ायदा तहज्जुद पढ़ने वाले थे। मुझे तलक़ीन किया करते थे और कहा करते थे घर में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा करो ताकि हमारे घर में ख़ुदा तआला की रहमतें हों।

कहती हैं कि जब आप यूनीवर्सिटी में नायब डीन के ओहदे पर फ़ायज़ हुए तो एक दिन एक औरत रोती हुई आई। उसने कहा कि मेरी लड़की फ़ेल हो रही है उसे पास कर दें। अगर वह पास न हुई तो मेरा ख़ावंद उस की फ़ीस भी नहीं देगा और मारेगा भी। और बहुत सारी रक़म ले के आई कि यह रक़म आप रख लें। तो उन्होंने कहा कि अगर रकमें दे के पास होना हो तो फिर ग़रीब तो कभी पास नहीं होगा। तुम यूं करो ये जो पैसे तुम मुझे रिश्वत देने लाई हो, मैं तो अहमदी हूँ मैं तो ऐसे काम नहीं कर सकता तुम यह अपने पास रखो और इसी से फ़ीस दे देना और अगर कमी होगी तो मैं तुम्हें मज़ीद फ़ीस के लिए दे दूँगा। लेकिन यह जो सिफ़ारिश है कि रिश्वत ले के पास कर दूं यह नहीं हो सकता। लेकिन बहरहाल वह रक़म का थैला वहां छोड़ गई। उनकी बीवी ने दिखाया कि यह थैला पड़ा है तो वह उठा के एकाऊंटैंट के पास ले गए। इस औरत से उन्होंने पूछा कि मेरा घर तुम्हें किस ने बताया? तुम तो मुझे जानती नहीं। उसने कहा कि मुझे यूनीवर्सिटी के एकाऊंटैंट ने बताया है। बहरहाल यह एकाऊंटैंट के पास गए, रक़म उस को दी और उसे कहा कि इस को वापस करो। यूनीवर्सिटी की मीटिंग बुलाई और वहां यह सारा मामला पेश किया और बताया तो इस पर वहां जो सारे प्रोफ़ैसर इकट्ठे हुए जो ऐगज़ैक्टिव थे, उन्होंने कहा कि वह तो तीन लाख फ्राँक ले कर आई थी और यह डेढ़ लाख हैं। इस में से वह भी किसी एकाऊंटैंट ने ही इधर उदहर कर लिए थे तो बहरहाल उनके मुख़ालेफ़ीन यह चाहते थे कि रिश्वत का इल्ज़ाम लगवाया जाए और उनको नायब डीन के ओहदे से फ़ारिग़ करवाया जाए, लेकिन इस में सफल न हुए और यूनीवर्सिटी वाले और दूसरे भी उनके साथियों ने बाद में बरमला इज़हार भी किया कि बहुत ही ईमानदार शख़्सियत थे। हमेशा अपने मुहल्ले की ग़रीब विधवाओं का ख़्याल रखते थे। किसी के घर की मुरम्मत करवा दी। बच्चों की दिलदारी करते। हर मैंबर से प्यार करते। वफ़ात पर ताज़ियत के लिए पारा को यूनीवर्सिटी के एग्रीकल्चर विभाग के बहुत से प्रोफ़ैसर "कोतोनो" आए। विभाग के इंचार्ज प्रोफ़ैसर डाक्टर इबराहीम ने कहा कि निहायत ही आजिज़ और दयानतदार इन्सान थे। यूनी-वर्सिटी में पापाबोंर (Papa Bonheur) के नाम से मशहूर थे, यह फ्रैंच शब्द है जिसका अर्थ है प्रत्येक को बरकत देने वाला। हर ज़रूरतमंद की सहायता करते। जो भी जेब में होता उसे दे देते कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे। अल्लाह तआला पर बहुत ही ज़्यादा विश्वास था।

इसहाक़ दाऊदा साहिब को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़िलाफ़त से बेपनाह मुहब्बत थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का यह हाल था कहते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र तरेसठ साल है तो वह दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह मुझे इस से ज़्यादा आयु देना।

दिल के मरीज़ हो गए थे। एक मुबल्लिग ने बताया कि जब हार्ट सर्जरी के लिए फ्रांस गए, तो उन्होंने अलेसल्लाह की अँगूठी पहनी हुई थी। डाक्टर उतारने लगे तो उन्होंने कहा यह अँगूठी तो नहीं उतारनी। यह मौत तक मेरे साथ रहेगी क्योंकि यही अल्लाह तआला के फ़ज़ल हैं जिनको में हमेशा याद रखता हूँ।

यहां आजकल क़ायमक़ाम अमीर हैं और मुबल्लिग इंचार्ज हैं मियां क़मर। वह कहते हैं कि पाराको का जब मैं रीजनल मुबल्लिग था तो जो भी तनख़्वाह मिलती तो यह पहले ही शुरू में अपनी वसीयत और दीगर चंदा जात एक लिफ़ाफ़े में डाल कर मस्जिद में ले आते कि मेरी रसीद काट दें। हमेशा मुस्कुराते रहते और हर मुसीबत और परेशानी में यही कहते कि मैं दुआ कर रहा हूँ और ख़लीफ़ा वक़्त को भी दुआ के लिए लिख दिया है, अल्लाह तआला आसानी पैदा फ़रमाएगा।

पीछे रहेने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। बड़ी बेटी अज़ीज़ा मकसत दाऊदा एग्रीकल्चर में पी.एच.डी कर रही हैं। दोनों बेटे रक़ीब दाऊदा और मसरूर दाऊदा कम्पयूटर की तालीम हासिल कर रहे हैं। अल्लाह तआला इन बच्चों को भी उनके बाप के नक़श-ए-क़दम पर चलाए और मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। नमाज़ के बाद इन शा अल्लाह नमाज़ जनाज़ा होगी।

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें,
इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन
ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad